सभाविलास

जिसमें

अनेक कवियों के रचित नानाप्रकार
के छन्दों में सामयिक
विषय वर्णित हैं

दसवीं बार

लखनऊ

सुपरिन्टेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए. के प्रबन्ध से

५ जुज़ ७ वर्क़

श्रीगणेशाय नमः ॥

सभाविलास ॥

सोरठा ॥

बिघ्नहरण गणराय, मूषकबाहन गजबदन ।
गणपतिचरण मनाय, तबै काज कछु कीजिये ॥ १ ॥

दोहा ॥

आनन भावत स्वाद इमि, परो गह्यो सु मलिन्द । कृष्ण चरण अरबिन्द को, पियत सदा मकरन्द २ ममता भ्रमता के मिटे, उपजे समता ज्ञान । रमे जो रमता राम सों, यमता गहै न मान ३ साधि सक्यो नतु साध सँग, लाय न सक्यो समाध । बिषय बिषाद उपाधि तज, हरि पल आध अराध ४ निगमरु गीताने कह्यो, परमपुनीता नाम । बीत्यो जन्म जु जात है, भजले सीताराम ५ मन

की मिटै मलीनता, होय लीनता साथ। नीकी यही प्रबीनता, भजिये दीनानाथ ६ जिन पायो हरि रस परम, मिटे भरम भय दोय। गह्यो धर्म अपकर्म तजि, मान परमगति होय ७ सुखकारण तारण तरण, वारण लयो उबार। कंस पछारन मान हरि, निरधारण आधार ८ काम क्रोध लागी सुरत, वहै अभागी जान। हरि अनुरागी जासु मति, सो बड़भागी मान ६ सुखदायक भायक भगत, उपजायक आनन्द। तीन लोकनायक जपौ, अघघायक ब्रजचन्द १० पौरी पद निर्वाण की, यहै ज्ञान की गाथ। आज्ञा वेद पुराण की, जपौ जानकीनाथ ११ जपै गणेश सुरेश से, औ महेश मुख आप। आनँद देश बिदेश में, हृषीकेश के जाप १२ घने बाज गजराज हैं, सुख के सने समाज। बने ठने किहकाज हैं, जो न हेत ब्रजराज १३ उपजावन आनन्द उर, पतित सु पावन राम। आवन जावन जात मिट, जप

बावन को नाम १४ जौलौं घट में श्वास है, होयरहो हरिदास। पूरै आश निराश की, बासुदेव उर बास १५ मान मुण्डमाली कह्यो, नरककुण्ड नहिं जाय। कोट झुण्ड पापी तरे, पुण्डरीक गुण गाय॥ १६॥

अथ दृष्टान्त॥

भाव सरस समुझत सबै, भले लगैं यह भाय। जैसे औसर की कही, बानी सुनत सुहाय १७ नीकी पै फीकी लगै, बिन औसर की बात। जैसे बरणत युद्ध में, रस सिंगार न सुहात १८ फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय बिचार। सबके मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गार १९ जाही ते कुछ पाइये, करिये ताकी आस। रीते सरवर पै गये, कैसे बुझत पियास २० स्वाति बूंद है सघन में, चातक मरत पियास। जो जाही को ह्वैरहै, सो तिह पूरै आस २१ भले बुरे सब एकसे, जौलौं बोलत नाहिं। जान परत हैं काक पिक, ऋतु वसन्त के माहिं २२

मधुर बचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान। तनक शीतजल सों मिटै, जैसे दूध उफान २३ सबै सहायक सबलके, कोई न निबल सहाय। पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय २४ कछु बसाय नहिं सबल सों, करै निबल सों जोर। चलै न अचल उखार तरु, डारत पवन झकोर २५ जो जाही सों रचि रह्यो, तेहि ताही सों काम। जैसे किरवा आक को, कहा करै बसि आम २६ प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय। दूध दही ते जमत है, कांजी ते फटजाय २७ घरघर कबहुँ न जाइये, गये घटत है जोति। रवि-मण्डल में जात शशि, छीन कला छवि होति २८ ब्रह्म बनाये बन रहे, ते फिर और बनैन। कान क-हत नहिं बैन जों, जीभ सुनत नहिं बैन २९ मूरख गुण समझै नहीं, तौ न गुणी में चूक। कहाभयो दिन को विभव, देखै जो न उलूक ३० मूढ़ तहांही मानिये, जहां

न पण्डित होय। दीपककी रविके उदय, बात न बूझै कोय ३१ निपट अबुध समझै कहा, बुधजन बचन बिलास। कबहूं भेक न जानही, अमल कमल की बास ३२ सांच झूठ निर्णय करै, नीतिनिपुण जो होय। राजहंस बिन को करै, क्षीर नीर को दोय ३३ दोषहि को उमहै गहै, गुण न गहै खल लोक। पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक ३४ कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर। समय पाय तरवर फरै, केतिक सींचो नीर ३५ क्यों कीजे ऐसो यतन, जाते काज न होय। परबत पै खोदै कुवाँ, कैसे निकसै तोय ३६ जो चाहै सोई करै, बड़े अशाङ्कित अङ्ग। सब के देखत नगन हर, धरत गौरि अर्द्धङ्ग ३७ बड़े सहजही बात सों, रीझ देत बखशीश। तुलसीदल तें विष्णु ज्यों, आक धतूरे ईश ३८ सुधरी बिगरै बेगही, बिगरी फिर सुधरै न। दूध फटै कांजी परे, सो फिर दूध बनै न ३९ छोटे नर ते रहत हैं, शोभायुत

सिरताज । निरमल राखै चाँदनी, जैसे पायन्दाज ४० सहज रसीलो होय सो, करै अहित पर हेत। जैसे पीड़ित कीजिये, ईख तऊ रस देत ४१ कबहुँ कुसङ्ग न कीजिये, किये प्रकृति की हानि । गूँगेको समझायबो, गूँगे की गति आनि ४२ कहा करै कोऊ यतन, प्रकृति और की और। बिष मारै ज्यावै सुधा, उपजहिं एकहि ठौर ४३ डरै न काहू दुष्टसों, जाहि प्रेमकी बान । भवँर न छोंड़ै केतकी, तीखे कण्टक जान ४४ धन बाढ़े मन बढ़गयो, नाहिंन मन घट होय। ज्यों जल सँग बाढ़े जलज, जल घट घटै न सोय४५ सब ते लघुहै माँगबो, या में फेर न सार। बलि पै याचत ही भये, बावन कर करतार ४६ सबै एक से होत नहिं, होत सबन में फेर। कपरा खादी बाफतो, लोह तवा शमशेर४७ जैसे की सेवा करै, तैसी आशापूर। रतनाकर सेवै रतन, सर सेवै शालूर ४८ होत सुसङ्गत सहज सुख, दुख कुसङ्ग के थान। गन्धी और लुहारकी, बैठे देख दुकान ४९ ठौर

छुटै ते मीत हू, है अमीत सतरात। रवि जल उखरै कमल को, गारत जारत जात ५० जातगुनी जात न तहां, आडम्बरयुत सोय। पहुँचेचङ्ग अकाशलौं, जो गुन संयुत होय ५१ गुनवारो सम्पति लहै, लहै न गुनबिन कोय। काढ़ै नीर पतालते, जो गुनयुत घट होय ५२ अरि छोटो गिनिये नहीं, जाते होत बिगार। तृणसमूह को छिनक में, जारत तनक अँगार ५३ पण्डित जनको श्रम मरम, जानत जे मतिधीर। कबहूँ बांझ न जानही, तन प्रसूत की पीर ५४ वीर पराक्रम ना करै, तासों डरत न कोय। बालकहू के चित्रको, बाघ खिलौना होय ५५ नृप प्रताप ते देश में, रहै दुष्ट नहिं कोय। प्रकटै तेज दिनेश को, तहां तिमिर नहिं होय ५६ कारज ताहीको सरै, करै जो समय निहार। कबहुँ न हारै खेल जो, खेलै दांव बिचार ५७ कोऊ दूर न करसकै, उलटै विधि के अङ्क। उदधि पिता तउ चन्द्र को, धोय न सक्यो कलङ्क ५८

गाहक सबै सपूत के, सारै काज सपूत। सब को दम्पन होत है, जैसे बन को सूत ५६ करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात ते, शिल पर परत निशान ६० को सुख को दुख देत है, देत कर्म झकझोर। उरझै सुरझै आपही, ध्वजा पवन के जोर ६१ भली करत लागै बिलँब, बिलँब न बुरे बिचार। भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगै न बार ६२ सोई अपनो आपनो, रहै निरन्तर साथ। होत परायो आपनो, शस्त्र पराये हाथ ६३ कह रस में कह रोस में, अरिसों जिन पतियाय। जैसे शीतल तप्त जल, डारत अग्नि बुझाय ६४ अन्तर अँगुरी चार को, सांच झूँठ में होय। सब मानै देखी कही, सुनी न मानै कोय ६५ होय भले के सुत बुरो, भलो बुरे के होय। दीपक सों काजल प्रकट, कमल कीचमें जोय ६६ होय भले चाकरन ते, भलो धनी को काम। ज्यों अङ्गद

हनुमान ते, सीता पाई राम ६७ सुख सज्जन के मिलन को, दुर्जन मिले जनाय। जानै ऊख मिठास को, जब मुख नींब चबाय ६८ जाहि मिले सुख होत है, तिह बिछुरे दुख होय। सूर्य उदय फूलै कमल, ताबिन सकुचै सोय ६९ झूठे हूं करिये यतन, कारज बिगरै नाहिं। कपट पुरुष धन खेत पर, देखत मृग फिर जाहिं ७० कारज सोई सधरि है, जो करिये समभाय। अतिबरसे बरसे बिना, ज्यों करषन कुम्हिलाय ७१ रहै प्रजा धन यत्न सों, जहँ बांकी तरवार। सो फल कोउ न लैसकै, जहां कटीली डार ७२ पण्डित अरु बानिता लता, शोभित आश्रय पाय। है माणिक बहुमोल को, हेमजटित छवि छाय ७३ अपनी प्रभुता को सबै, बोलत झूठ बनाय। वेश्या बरष घटावही, योगी बरष बढ़ाय ७४ कहूं कहूं गुण दोषते, उपजत दुःख शरीर। मधुरी बानी बोल के, परत पींजरा कीर ७५ भले बुरे निबहैं सबै, महत पुरुष के सङ्ग। चन्द्र

सर्प जल अग्नि ये, बसत शंभु के अङ्ग ७६ विना कहेहू सतपुरुष, परकी पूरैं आश । कौन कहतहै सूर्य को, घर घर करत प्रकाश ७७ कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको सङ्ग । पाथर डारे कीच में, उछलि बिगारै अङ्ग ७८ मीठी खाटी वस्तु नहिं, मीठी जाकी चाह । अमली मिसरी छाँड़िके, आफू खात सराह ७९ खाय न खरचै शुद्ध मन, चोर सकल लैजाय । पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ मलै पछताय ८० उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय । परो अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय ८१ जानि बूझ अजुगत करे, तासों कहा बसाय । जागत ही सोवत रहै, ताको कहा जगाय ८२ सजन बचावै कष्ट सों, रहे निरन्तर साथ । नैन सहाई ज्यों पलक, देह सहाई हाथ ८३ अरिके कर में दीजिये, अवसर को अधिकार । ज्यों ज्यों द्रव्य लुटाइहै, त्यों त्यों यश विस्तार ८४ बुद्धिमान गंभीर को, संगत लागत नाहिं ।

ज्यों चन्दनढिग अहि रहत, बिष न होय तिहमाहिं ८५ सज्जन को दुखहू दिये, दुरजन पूरै आस। जैसे चन्दन को घिसे, सुन्दर देत सुवास ८६ सज्जन चित कबहुँन धरत, दुर्जन जनके बोल। पाहन मारै आम को, तउ फल देत अमोल ८७ बिरले नर पण्डित गुनी, बिरले बूझनहार। दुखखण्डन बिरले पुरुष, जे उत्तम संसार ८८ जे करतार बड़े किये, मग पग धरत बिचार। दुर्जनहू सों मिल चलैं, बोलैं रोस निवार ८९ जाहि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ। ज्यों पलाश सँग पान के, पहुँचै राजा हाथ ९० बचन पारखी होहि तू, पहिले आप न भाख। अनपूछे नहिं भाषिये, यही सीख जिय राख ९१ मुखरु श्रवण दृग नासिका, सबही के इकठौर। कहबो सुनिबो देखिबो, चतुरन को कछु और ९२ इक कामिनि अरु कवि बचन, दोऊ रस को ठौर। बेधक को मन बेधई, वे कामिनि कवि और ९३ जो तू चाहै अधिक रस, सीख

ईख की लेय। जो तोसों अनरस करै, ताहि अधिक रस देय ९४ नरकी अरु नलनीर की, गति एकै करि जोय। ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै, त्यों त्यों ऊंचो होय ॥ ९५॥

अथ परवानो ॥

कैसे निबहै निबल जन, करि सबलन सों गैर। जैसे बस सागर बिषे, करत मगर सों बैर ९६ अपनी पहुँच बिचार के, करतब करिये दौर। ते ते पांव पसारिये, जेती लांबी सौर ९७ पिशुन छल्यो नर सुजन सों, करत विश्वास न चूक। जैसे दाह्यो दूध को, पीवत छांछहि फूंक ९८ फेर न ह्वैहै कपटसों, जो कीजे व्योपार। जैसे हांड़ी काठकी, चढ़ै न दूजी बार ९९ करिये सुख को होत दुख, यह कहु कौन सयान। वा सोने को जारिये, जासों फाटै कान १०० भले बुरे जहँ एक से, तहां न बसिये जाय।ज्यों अन्याय पुरमें बिकै, खर गुड़ एकै भाय १०१ भाव भाव की सिद्धिहै, भाव भाव में भेव। जो मानै तो

देवहै, नहीं भीतको लेव १०२ अति अनीति लहिये न धन, जो प्यारो मन होय। पाये सोने की छुरी, पेट न मारै कोय १०३ मूरखको पोथीदई, बांचन का गुणगाथ। जैसे निरमल आरसी, दई आँधरे हाथ १०४ अति हठ मत कर हठ बढ़ै, बात न करि है कोय। ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय १०५ लालचहू ऐसो भलो, जासों पूजै आस। चाटतहू कहुँ ओसके, बुझत काहु की प्यास १०६ जैसो गुण दीनो दई, तैसो रूप निबन्ध। ये दोऊ कहँ पाइये, सोनो और सुगन्ध १०७ प्रेम निबाहन कठिन है, समुझ कीजियो कोय। भङ्ग भखन है सुगम पै, लहर कठिन की होय १०८ एक बस्तु गुणहोत है, भिन्न प्रकृति के भाय। भँटा एक को पित करै, करत एक को बाय १०९ बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करुवे बैन। लात खाय चुपकारिये, जु हो दुधारू धेन ११० करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय। रोपै पेड़ बबूल को,

आम कहां ते होय १११ होय बुराई ते बुरो, यह कीन्हों निरधार। खाड़ खनैगो और को, ताको कूप तयार ११२ एक भेष के आसरे, जाति बरण छिप जात। ज्यों हाथी के पांव में, सबको पांव समात ११३ कन कन जोरे मन जुरे, खाते निबरे सोय। बूंद बूंद सों घट भरे, टपकत बीते तोय ११४ श्रमही सों सब मिलत है, बिन श्रम मिलै न काहिं। सीधी अँगुरी घी जम्यो, क्योंहू निकरै नाहिं ११५ होत न कारज मो बिना, यहै कहै सो अयान। जहां न कुक्कुट शब्द तहँ, होत न कहौ बिहान ११६ यही बात सबही कहें, राजा करै सो न्याव। ज्यों चौपर के खेल में, पांसा परै सो दांव ११७ पर को अवगुण देखिये, अपनो दृष्ट न होय। करै उजेरो दीप पै, तरे अँधेरो जोय ११८ अपनी अपनी ठौरपर, सबको लागै दाव। जल में गाड़ी नाव पर, थल गाड़ी पर नाव ११९ सुख दिखाय दुख दीजिये, खल सों लरिये काहि। जो गुर दीन्हे ही म-

रत, क्यों बिष दीजे ताहि १२० अनपूछे ही जानिये, मूढ़ देख मनमाहिं । छलकै ओछे नीरघट, पूरे छलकै नाहिं १२१ बिनशत बार न लागही, ओछे जन की प्रीति । अम्बर डम्बर सांझ के, ज्यों बालू की भीति १२२ कुल सुपूत जान्यो परै, लखि सब लक्षण गात । होनहार बिरवान के, होत चीकने पात १२३ जो धनवन्त सुदेय कछु, देय कहा धनहीन । कहा निचोरै नग्न जल, न्हान सरोवर कीन १२४ होत निबाह न आपनो, लीन्हे फिरै समाज । चूहा बिल न समातहै, पूंछ बाँधिये छाज १२५ बिना प्रयोजन भूलहू, ठटिये नाहीं ठाट । जानो नहिं जा नगर को, ताकी पूछ न बाट १२६ इंगित औ आकार तें, जानलेत जो भेट । तासों बात दुरै नहीं, ज्यों दाई सों पेट १२७ आप कहै नाहिंन करै, दाता को है हेत । आप न जावै सासरे, औरन को सिख देत १२८ जो कहिये सो कीजिये, पहिले कर निरधार । पानी पी

घर पूछनो, नाहीं भलो बिचार १२६ पाछे कारज की-
जिये, पहिले यतन बिचार। बड़े कहत हैं बांधिये, पानी
पहलेपार १३० ठीक किये बिन और की, बात सांच
मतथर्प। हाथ अँधेरी रैन में, परी जेवरी सर्प १३१ झूठ
बिना फीकी लगै, अधिक झूठ दुख भौन। झूठ तितोही
बोलिये, ज्यों आटे में लोन १३२ ठौर देखके हूजिये,
कुटिल सरल गति आप। बाहर टेढ़ो फिरत है, बांबी सूधो
सांप १३३ दोऊ चाहैं मिलन को, तौ मिलाप निरधारि।
कबहूँ नाहिंन बाजि है, एक हाथ ते तारि १३४ आप
अकारज आपनो, करत कुसङ्गति साथ। पाय कुल्हाड़ी देत
हैं, मूरख अपने हाथ १३५ ताहीको करिये यतन, रहिये
जाकी आर। कौन बैठके डार पर, काटै सोई डार १३६
परतछ नीके देखिये, कह बरनै कोउ ताहि। कर कङ्कन
को आरसी, को देखतहै चाहि १३७ आये आदर ना करै,
जात रहे पछताय। आयो नाग न पूजिये, बांबी पूजन

जाय १३८ निबल सबल के पक्षते, सबलन सों अनखात। देत हिमायत की गधी, एराकी के लात १३६ बहुत द्रव्य संचय जहां, चोर राज भय होय। कांसे ऊपर बीजुली, परत कहत सब कोय १४० ओछे नरके पेट में, रहै न मोटी बात। आध सेरके पात्र में, कैसे सेर समात १४१ तरसेहू परसै नहीं, नौढ़ा रहत उदास। जो सर सूखा भादवें, किसी उन्हाले आस १४२ हिलन मिलन चितवन मिटी, बय बीते करतूत। योगी था सो उठगया, आसन रही भभूत १४३ मिलन चले आये बहुरि, तउ न रही तिय चिन्त। कांधे डाली कामली, योगी काके मिन्त १४४ तज के सुन्दर चतुर पिय, बिरझै अनत बसाय। कूकर चौक चढ़ाइये, चाकी चाटन जाय १४५ निरखि प्रात पिय सौति सब, रही प्रीति हित हार। लेय परोसन झोंपड़ी, नित उठ करती रार १४६ वय रति मति गति चाह बिन, पिय रिझवन की वाक। धोबी

बेटा चांदसा, सीटी और पटाक १४७ रूठ्यो पिय सौतिन मिल्यो, सखिहि खिजत करमान। ना बस चलत कुम्हार सों, खर के मेंठति कान १४८ पिय चितवन पठई सखी, रही बैठ सुख लेय। चारौं कुतिया मिलगई, पहरो काको देय १४६ सब सुखन्द पिय हित करै, तऊ न रहतिय नीति। भुस ऊपर को लीपनो, अरु बालू की भीति १५० पिय औरै चितवन चलन, घरतिय सों नहिं लेश। जैसे कन्ता घर रहे, तैसे गये बिदेश १५१ बय बीते आये रमन, अब न लहत चित चाय। बीत्यो ब्याह कुम्हार को, भांड़ा लै लै जाय १५२ पीव परोसिन सों रहत, तियन कहत डर काज। अपनी जाँघ उघारिये, आपहि मरिये लाज १५३ सौतिन कोउ बय में गनी, पिय ते भयो बियोग। जिह घर जितो बधावनो, तिहि घर तितनो सोग १५४ तिय बैठी मन सकुच के, पिय आये नाहिं नाय। सने घर को पाहनो, ज्यों आवै त्यों जाय १५५

सुख बिलसै योबन समय, फिर पछतावत बाल। गई बास बोदार की, रही खाल की खाल १५६ सौति लरी पिय पै गई, वहै रह्यो रिस पाग। घर की दागी बन गई, बन में लागी आग १५७ पाय पलोटत द्वै तिया, द्वै तिय सोवन साथ। इक द्वै द्वै अरु चीकनी, पुनि लाजू दोउ हाथ १५८ पिय आये योबन बितै, बहुरो चले बिदेश। दोनों खोई जांगना, मुद्रा अरु आवेश १५६ अद्भुत हित प्रीतम प्रिया, सौतिन जानत सार। काजर सब कोउ देत है, चितवन माहिं बिचार १६० नौढ़ा प्रौढ़ा सों कहत, हौं जानत रस घात। कूआ में की मेंढ़की, कहै समुद्र की बात १६१ सौति आज टोना कियो, हौं न कहौंगी सोय। हम तो दुरयो प्यार में, को कहि बैरी होय १६२ सौति बात मीठी कहत, तऊ सौति सतराय। सौगाहासूत्रौ पढ़े, अन्न बिलाई खाय १६३ आलि लई सँगटहल को, करन लगी रस रास। गाड़र आनी ऊनको, बैठी चरै

कपास १६४ सौति प्रीति जोरत रहै, दुलहिन देत उठाय। आधौ बाँटै जेवरी, पाछे बकरीखाय १६५ जोबन लौं तिय रस रमी, बीते भयो वियोग । कोल्हू सों खलि उतरी, भई पलीता योग १६६ मान मनाये बिन कहत, आव खेल हँसबोल । बनिक द्वार बैठन न दे, कह झुक कोसो तोल १६७ नौढ़ासों अति रतिकरी, सो न कहत रत चाव । गोजा में के घावको, का जाने कै राव १६८ अधिक मानते तिय तजी, पियन मिले हित जोड़ । बनजारेकी आग ज्यों, गयो बलंती छोड़ १६९ सुच नायक सुच तिय रमै, असुच न हिये समाय। कै हंसा मोती चुगै, कै लंघन रह जाय १७० कबहुँ न रस के कुच गहे, रिसकै गहे न केश । जैसे कन्ता घर रहै, तैसे गये बिदेश ॥ १७१ ॥

अथ प्रेम ॥

भूतलगे मदिरा पिये, सब काहू सुध होय। प्रेम सुधा रस जिन पियो, तिन न रहे सुध कोय १७२ अद्भुत

पैंड़ो प्रेमको, न्याय कहत सब कोय। नयननसों नयना मिलै, घाव करेजे होय १७३ जे घट बिरह अँवा अगिन, परपक भये सुनाय। तिनही घटमें नन्दभनि, प्रेम अमी ठहराय १७४ जब बिछुरत तब होत दुख, मिलिके हियो सिराय। याही में रस है भये, प्रेम कह्यो क्यों जाय १७५ जबलग मनके बीच कछु, स्वारथ को रस होय। शुद्ध सुवा कैसे कहै, परै बीच में नोय १७६ मन मतङ्ग मद रस मत्यो, धस्यो प्रेम रन धाय। लोक वेद कुलकान की, दई सैन बिचलाय १७७ नीको बिरह समीप तें, जामें मिलन कि आस। कहिये भलो संयोग क्या, जाने बिछुरन बास १७८ प्रीति न टूटै अनमिले, उत्तम मनकी लाग। सौयुग पानीमेंरहै, मिटै न चकमक आग॥ १७९॥

अथ नेत्र॥

अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार। जियत मरत झुक झुक परत, जेहि चितवत यक बार १८०

दौरत काहू और के, थके न कोऊ और। मेरे दृग पै थक रहैं, देखत पिय दृग दौर १८१ प्यारो दृग अञ्जन दिये, यहै लूक जन होय। आय हिये मन ले गई, देख सक्यो नहिं कोय १८२ नयन सलोने अधर मधु, कह रहीम घट कौन। मीठो भावै लोनपर, मीठेहू पर लौन १८३ मन राखौं हौं बरजिकै, जिय राखौं समझाय। नयना बरजे ना रहैं, मिलैं अगाऊ जाय १८४ जब बरजत तब ना रहे, गये प्रेम रस लैन। अपबस तें परबस भये, ये विश्वासी नैन १८५ पल न लगत है एक पल, छिन न घटत घट साँस। साहस मन जब ते चुभी, नैन सैनकी फाँस १८६ समझाये समुझत नहीं, पलक देत नहिं चैन। नीर भरे प्यासे रहैं, निपट अनोखे नैन १८७ पिय मूरति चितलायके, अब रोवैं यह नैन। बैरी आग लगायके, दौरे पानी लैन १८८ प्यारे नयनन की कथन, कैसे कहौं कबित्त। खिनक

साह खिन चोरटा, खिन बैरी खिन बित्त १८९ अनि-यारे तीखे कुटिल, अंकुश से दृग बान। लागत सीधे आय के, पाछे खींचैं प्रान १९० प्रीतम नैनन में गिरी, जिन नैनन की सैन। फिर काढ़न को चाहिये, वेई तीखे नैन १९१ लटपट पग धरती धरै, अटपट बोलत बैन। कछु पिय सों खटपट भई, सु टप टप टपकत नैन १९२ पात झरंते इमि कहैं, सुन तरुवर बनराय। अबके बिछुरे कब मिलैं, दूर परैंगे जाय १९३ आलम ऐसी प्रीति कर, ज्यों बारिज हित बार। वह सूखे वह ना रहै, मिटै मूल दलडार १९४ प्रीति जो सीखो ईख सों, जहां जो रस की खान। जहां गांठ तहँ रस नहीं, यही प्रीतिकी बान १९५ बल्लारियां कुलवंतियां, नेहा ना चूकन्त। जित्थे कराठ बिलग्गियां, तित्थेही सूखन्त १९६ प्रीति जो ऐसी कीजिये, ज्यों निशि चन्दा हेत। शशि बिन निशि है सांवरी, निशि बिन चन्दा श्वेत १९७

बिपति बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय। इष्ट मित्र बन्धू जिते, जान परैं सबकोय १६८ नेह निबाहन है कठिन, फिरयो जगत सब जोय। विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ लग सबकोय १६६ प्रीति प्रीति सब कोउ कहै, कठिन तासु की रीति। आदि अन्त निबहै नहीं, बारू कीसी भीति २०० सहसबार डुबकीलई, मुक्ता करहि न लाग। सागर को कह दोषहै, बुरे हमारे भाग २०१ बाला निकसी तीर जब, नीर चुवन बरबीर। मानौ अँसुवन रोवती, तन बिछुरन की पीर २०२ अलकावलि मंदोपये, गोरे मुख की लोय। ज्यों रूखनमों चाँदनी, भिलमिल भिलमिल होय २०३ मुक्ता तियके कान में कागुन सदा कँपाय। तिरछी चितवन ते डरै, मत फिर बेध्यो जाय २०४ रोमावलि हियरे सखी, नाहिन एरी नाहिं। श्याम ध्यान हिरदय बसै, ताकीहै परछाहिं २०५ चुम्बन समय जु नासिका, बेसर मुनिय डुलाय। अधर

चुरावन पीय पै, मानों हाहा खाय २०६ तिलचारा मा-
निय सलिल, अलक फन्द बलचार। मन पक्षी गहि गहि
किते, डारै श्रवण पिटार २०७ गुञ्जा ऐसी हो रहे, मुक्ता
बेसर बाल । नयन ओर के श्याम सब, अधर ओर के
लाल २०८ जबते मो ऊपर पड़ी, श्याम सलोनी जोति।
लौनी लागै भीति ज्यों, देह दूबरी होति २०९ गोरे मुख
पर श्याम तिल, ऐंच लियो जिय मोर। नेही कैसे बच
रहै, पड़े चांदनी चोर २१० फेंटा चले छुड़ायके, निबल
जानि पिय मोहिं । मन की लगन छुड़ायहौ, तो बल
बदिहौं तोहिं २११ गवन समय फेंटा गह्यो, सुन्दर हित
जियजान। छूटत ही दोऊ छुटे, उत फेंटा इत प्रान २१२
गौन समय फेंटा गह्यो, छांड़ जु कह्यो सुजान । पीउ
पियारे कहौ तुम, फेंटा तजूं कि प्रान २१३ आज सखी
हम इम सुन्यो, पहु फाटत पिय गौन । पहु अरु हियरे
दोय हैं, पहिले फाटै कौन २१४ बाला प्रथम वियोगिनी,

घर ही घर पूछंत। बलम पयाने ए सखी, बल याह्न बाढ़ंत २१५ बिरह घटा कौंधा सुरत, क्षण क्षण कौंधत आहि। नयन नीर बरषालगी, गरजन आहि कराहि २१६ सूनो भवन विदेश पिय, उससि साँस तिय लेत। मूरति आवै ध्यान में, उठ उठ आदर देत २१७ आज द्वीज विदेश पिय, शशि निकस्यो इहि ओर। मम नयना अरु पीयके, आय भये इकठौर २१८ उन बिन सब ऋतु फिर गई, देख दिनन के फेर। जेठ भिजोई आंसुवन, सावन जारी घेर २१९ प्रीतम तुम्हरे दर्श को, रह्यो अधर जिय आय। अब कह आज्ञा होति है, रहै कि फिर घट जाय २२० मो मन मनसा इम हुती, जन्म न छाड़ौं पाय। बिछुरन अंक जो विधि लिखे, तासों कहा बसाय २२१ मुख ग्रीषम पावस नयन, जिय महिया जड़ काल। पिय बिन तन ते तीन ऋतु, कबहुँ न मिटत जमाल २२२ जबलग हिय में घर सकी, तबलग धरो जु धीर। मीरन अब कैसी बनी,

जु अधिक पिरानी पीर २२३ मन बहलावत दिनगये, महाकठिन है रैन। कहा करौं कैसे मरौं, बिन देखे नहिं चैन २२४ खिन बैठै खिन उठचलै, खिनखिन ठाढ़ी होय। घायलसी घूमति फिरै, मरम न जानै कोय २२५ साहस तन मन ज्ञान गुण, सबै गये पिय सङ्ग। चितवन दामिनि सी गिरी, मरम कियो जिन अङ्ग २२६ बिरही लोगन में रहत, तिय बिन नीर गँभीर। मीन रहत सब नीर में, इन मीनन में नीर २२७ तेरे बिरह समुद्र में, हौं जहाज भइ कन्त। तन मन योबन डूबियो, प्रेम ध्वजा फहरन्त २२८ रोम रोम बूँदैं चुवैं, लोग प्रस्वेद कहन्त। सजनी सजन वियोग ते, सब तन रुदन करन्त २२९ पिय बिछुरत बिछुरे सबै, तनमन के सुख चैन। घर बाहर न सुहात कछु, तलफ कटैं दिन रैन २३० सम्मन इक दिन वै हुते, बिच न सुहाते हार। वायु जो कोऊ फिर गई, अब बिच परे पहार २३१ कालकूट ते कठिन है, जो ब्यापै उह लाल।

यम नेरे आवै नहीं, बिरह काल को काल २३२ तन दुख मन दुख नयन दुख, हियेभई दुख खान। मानौ कबहूँ ना हुती, या सुखसों पहिंचान २३३ रूप सयानप चातुरी, सबै गई पिय साथ। देखौ सखी जु रहगई, एक बौरई हाथ २३४ हौं सजनी जानत नहीं, पिय बिछुरन की सार। जिय बिछुरन ते कठिन है, पिय बिछुरन की बार २३५ हौं सजनी जानत नहीं, बिछुरी भूले भाय। अबकी बेर जु फिर मिलौं, जन्म न छोड़ौं पाय २३६ अहमद गति अवतारकी, कहत सबै संसार। बिछुरे मानुष फिर मिलैं, यही जान अवतार २३७ बिरह तपन अति ही कठिन, जानत है सब कोय। देखि सखी या आगको, जरिके शीतल होय २३८ बिरह दही पनघट गई, तपन न तऊ सिराय। भरै धरै शिर गागरी, रीती ह्वै ह्वैजाय २३९ मीरन बिछुरतही पिया, उलटगयो संसार। चन्दन चन्दा चांदनी, भये जरावनहार २४० तुम बिन एतो

को करै, छुपाजु मेरेनाथ। मोहिं अकेली जानि के, दुख राख्यो है साथ २४१ मीरन प्यारे अस कह्यो, सपने देखौ मोहिं। तुम बिन नींद न आवही, कैसे देखौं तोहिं २४२ प्यारे मेरे नींद की, बात तिहारे हाथ। आवत है तुम साथही, गई तिहारे साथ २४३ एकौ दुख निबस्यो नहीं, दूजो पहुँच्यो आय। हियो कहौं कै पुल कहौं, दुखकी किधौं सराय २४४ कहा करौं परगट नहीं, लागत तोसों घात। प्यारे सपने मांझ में, मेरी तेरी बात २४५ प्रीतम प्यारे के बिरह, नागिनसी यह रैन। लम्बीकारी विषभरी, देख भज्यो है चैन २४६ घरी पहरसी पहर दिन, दिन भा पहरसमान। छिन २ दूबरि बिन मिले, मोहिं तिहारी आन २४७ लालपिया के बिछुरतै, बिछुर गये सब चैन। भूख प्यास नींदौ गई, ऊर्द्ध वायु भये नैन २४८ जबलग चल मारग पिया, आवन की औसेर। तब लग हिय में हे सखी, हौंसनि के भये ढेर २४९ प्रीतम तुम गुन बे-

लरी, पसरीमों उर माहिं। नेह नीरसों नित बढ़ै, क्योंहूं सूखत नाहिं २५० प्रीतमको संदेशरा, कहत हियो रुँधि-याय। सूधे बात न आवही, योंही कहियो जाय २५१ प्रीतम को पतिया लिखी, लिखत लिखी भरताव। वामें और कछू नहीं, कै हाहा कै आव २५२ करकाँपत पतिया लिखत, जल भरि आवत नैन। कोरो कागद हाथ दै, मुखही कहिये बैन २५३ कागद भीजत नयन जल, कर काँपत मसिलेत। पापी बिरहा मन बसत, बिथा लिखन नहिं देत २५४ तुम बिछुरत छिन में मरौं, कहा जियौं बिन तोहिं। तुम मूरति मो मन बसैं, वही जियावत मोहिं २५५ लिखन पढ़नकी है नहीं, कही सुनी नहिं जात। अपने जिय ते जानियो, मेरे मनकी बात २५६ इह गुन पतिया ना लिखौं, धरे रहौं मन मौन। तुम प्रीतम जिय में बसौ, पाती बाँचै कौन २५७ पतिया ताहि पठाइये, जो साजन परदेश। निशि दिन हिरदे

में बसै, ताको कहा सँदेश २५८ बायस राहु भुजङ्ग हर, लिखत तिया ततकाल। लिखि लिखि पोंछत फिरि लिखत, कारन कौन जमाल २५९ प्रीतम तुम मति जानियो, भयो दूरको बास। देह खेह कितहूँ रहै, प्राण तिहारे पास २६० मनमाला तुव नाम की, जपत रहौं दिन रैन। नयन पियासे दरश के, नेक न पावैं चैन २६१ बासर भूख न नींद निशि, चित चिन्ता पिय तोरि। लोयन गङ्ग तरङ्ग गति, उठत हिलोरि हिलोरि २६२ पाती लिखन सँदेश तहँ, जहाँ न पहुँचै आप। प्रीति लुकञ्जन आंजिके, करिये मीत मिलाप २६३ मन चाहत है मिलन को, मुख देखन को नैन। श्रवण जो चाहतहैं सुनन, पिय प्यारेके बैन २६४ करकमलन पाती लिखों, प्यारी चतुर सुजान। इक इक अक्षर पै सखी, वारौं तन मन प्रान २६५ मेरो मन तोपै रह्यो, तेरो मन मो माहिं। दोऊ व्याकुल बिन मिले, चैन शरीरहि नाहिं २६६ तेरो

मेरो एक मन, दिखियत दोय शरीर। बान जो मारै काम इक, होत दुहुन को पीर २६७ मसि लेखन कागद नहीं, समाचार है मौन। अब हम तुम एकै भये, लिखै कौन को कौन २६८ नाद शब्द में बश कियो, मांस बेच धन लेहु। मृगछाला पर गाइयो, यह माँगौं मुहिं देहु २६९ मृगई चितई मृगा तन, लगे अहेरी घात। मिल नरसोई रावरे, चला न इन के गात २७० दधिसुत अबला अधरपर, शोभा ते लटकन्त। मानो भुजा सिकन्दरी, पन्थी मने करन्त २७१ तन समुद्र मन लहर है, रूप कहर दरियाव। मानो भुजा सिकन्दरी, पन्थी यहां न आव ॥२७२॥

सो० बुध बिद्या गुण ज्ञान, नेम चाव अरु हर्ष बल।
ये तजि होहिं अयान, जिहघटाबिरहासंचरै ॥२७३॥

अथ तुलसी कृत ॥

अपने अपने कर धर्पै, लिख पूजत तियभीत। सुफल फलै मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत २७४ तुलसी जहां

विवेक नहिं, तहां न कीजै बास। श्वेत श्वेत सब एक से, करर कपूर कपास २७५ राम नाम आराधबो, तुलसी बृथा न जाय। लरकाईं को पैरबो, आगे होत सहाय २७६ जिमि पनिहारी जेवरी, खैंचत कटै पषान। तुलसी रसना राम कहु, पाप कितक अनुमान २७७ तुलसी रसना तौ भली, जो तू सुमिरै राम। ना तौ काढ़ निकासिये, मुख में भलो न चाम २७८ तुलसी बिलँब न कीजिये, भजलीजे रघुवीर। तन तरकस तें जात है, श्वांस सरीखे तीर २७९ एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय। जो गहि सेवै मूलको, फूलै फलै अघाय २८० स्वारथ सीताराम हैं, परमारथ सियराम। तुलसी तेरो दूसरे, द्वार कहा है काम २८१ स्वारथ परमारथ सुलभ, सकल एकही ओर। द्वार दूसरे दीनता, उचित न तुलसी तोर २८२ तुलसी सोई चतुरता, राम चरण लौलीन। परधन परमन हरन को, बेश्या बड़ी प्रबीन २८३ चतुराई

चूल्हे परै, ज्ञानी जमके घाय । तुलसी राम सों प्रेम नहिं, सो जर मूल नशाय २८४ मोर २ सब कोउ कहत, तूको कह निज नाम । कै चुप साधै सुनि समुझि, कै तुलसी भज राम २८५ तुलसी अपने रामको, रीझ भजौ कै खीज । खेत परे ते जामिहै, उलटे सीधे बीज २८६ सी कहते सुख उपजिहै, ता कहते तम नास । तुलसी सीता जो कहत, राम न छोड़त पास २८७ तुलसी अघ सब दूरगे, रा अक्षर के लेत । फिर नेरे आवैं नहीं, मा अक्षर पढ़ देत २८८ आप आपने को अधिक, जिहि विधि सीताराम । तुलसी ताके पग तरे, मेरे तन को चाम २८९ तुलसी जोपै राम सों, नाहिंन सहज सनेह । मूड़ मुड़ायो सो वृथा, भाँड़ भये तजि गेह २९० मूड़ उघारन किन कह्यो, बरज रहे प्रियलोग । घरही सती कहावती, जरती नाहिं वियोग २९१ यथालाभ संतोष सुख, रघुपति चरण सनेह । तुलसी जो मन हाथ है,

जस कानन तस गेह २९२ प्रीति राम भज नीति पथ, चले राग रस जीति। तुलसी सन्तन के मते, यही भक्ति की रीति २९३ तुलसी खोटे दास को, रघुपति राखत मान। ज्यों मूरख उपरोहितहि, देय दान यजमान २९४ काहू के धनधाम हैं, काहू के परिवार। तुलसी ऐसे दीन के, सीताराम अधार २९५ नहिं सेवा नहिं बुद्धिबल, नहिं विद्या नहिं दाम। तुलसी पतित पतङ्ग की, तू पति राखै राम २९६ एक भरोसे राम के, किये पाप भर मोट। जैसे नारि कुनारि को, बड़ी खसम की ओट २९७ तुलसी छलबल छांड़िके, करिये राम सनेह। अन्तर कह भरतार सों, जिन देखी सब देह २९८ सब देखे परखे लखे, बहुत कहे कह होय। तुलसी सीताराम बिन, अपनो नाहीं कोय २९९ है अधीन यांचै नहीं, शीश नाय नहिं लेय। तुलसी मानो याचकहि, बिन रघुवर को देय ३०० गङ्गा यमुना सरस्वती, सात समुद्र

भरपूर । तुलसी चातक के मते, बिन स्वाती सब धूर ३०
एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास । स्वातिबूंद
रघुनाथ हैं, चातक तुलसी दास २०२ ज्यों कामी
चित्त में, चढ़ी रहत नित बाम । ऐसे हो कब लागि हौ
तुलसी के मन राम २०३ ज्यों गरीब की देह में, माघ
पूस को घाम । ऐसे हो कब लागिहौ, तुलसी के मन
राम २०४ तीन टूक कोपीन के, अरु भाजी बिन लौन ।
तुलसी रघुबर उर बसैं, इन्द्र बापुरो कौन २०५ गुण स्व
रूप बल द्रव्य को, प्रीति करै सबकोय । तुलसी प्रीति
सराहि जो, इन ते बाहिर होय २०६ मीन काट जल
धोइये, खाये अधिक पियास । तुलसी प्रीति सराहिये,
मुये मीतकी आस २०७ कहा कहौं छबि आजकी, भले
बने हो नाथ । तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष बान लो
हाथ २०८ मुरली मुकुट दुराय के, नाथ भये रघुनाथ ।
तुलसी रुचि लखि दासकी, धनुष बान लियो हाथ २०९

पशू गढ़न्ते नर भयो, भूले सींगरु पूंछ। तुलसी हरिकी भक्ति बिन, धूक दाढ़ी अरु मूंछ ३१० प्रभुताको सबकोउ चहै, प्रभुको चहै न कोय। जो तुलसी प्रभुको चहै, आपुहि प्रभुता होय ३११ तुलसी घरके घेरमें, घरी घरी तन छीन। कबहूं ना बन बन फिरै, कर करवा कोपीन ३१२ घरके घूमर घेर में, रामचरण लौलीन। तुलसी ऐसे सन्त को, कह करवा कोपीन ३१३ काम क्रोध मद लोभकी, जब लग मन में खान। तबलग पण्डित मूरखौ, तुलसी एक समान ३१४ तुलसी या जग आय के, कौन भयो समरत्थ। इक कञ्चन अरु कुचन को, किन न पसारे हत्थ ३१५ मन राखत बैराग में, घर में राखत रांड़। तुलसी किरवा नीमको, चाख्यो चाहत खांड़ ३१६ जब लग अंकुश शीश पर, तबलग निर्मल देह। तुलसी अंकुश बाहिरे, शिरपर डारत खेह ३१७ तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान। पाप पुण्य दोउ बीज हैं,

बवै सुलुनै निदान ३१८ एकघड़ी आधी घड़ी, आधी हू में आध। तुलसी संगति साधु की, हरै कोटि अप-राध ३१९ स्वामी ते सेवक बड़ो, जो निजधर्म समान। राम बाँधि उतरे जलधि, कूदि गये हनुमान ३२० स्वामी को सेवक घने, सेवक को प्रभु एक। तुलसी दो में सो बड़ो, जाके मन में टेक ३२१ तुलसी मन को मुकुर है, लखै सुलक्षण कोय। जैसो जाको भाव है, तैसो देखै सोय ३२२ होत भले के अनभलो, होत दानि के सूम। होत कुपूत सुपूत के, ज्यों पावक महँ धूम ३२३ नीच निचाई नातजै, साधुनहू के संग। तुलसी चन्दनबिटप बस, बिन बिष भौन भुवंग ३२४ आसनदृढ़ आहारदृढ़, सुमति ज्ञान दृढ़होय। तुलसी बिना उपासना, बिनदूलह की जोय ३२५ तन सुखाय पिंजर करै, धरै रैनि दिन ध्यान। तुलसी मिटै न बासना, बिना बिचारे ज्ञान ३२६ आवतही हरषै नहीं, नयनन नहीं सनेह। तुलसी तहां

न जाइये, कञ्चन वर्षें मेह २२७ हरष उठै आदर करै, आवत जान अतीत । तुलसी तबहीं जानिये, परमेश्वर सों प्रीत २२८ तुलसी या संसार में, भांति भांति जे लोग । हिलिये मिलिये प्रेमसों, नदी नाव संयोग २२९ तुलसी बिलँब न कीजिये, मिलिये सब सों धाय । को जानै किहि भेष में, नारायण मिलिजाय २३० तुलसी कहत पुकार के, सुनो सकल दै कान । हेमदान गजदानते, बड़ो दान सनमान २३१ परसुखसम्पति देखि सुनि, जरहिं ते जड़ बिन आग । तुलसी तिनके भागते, चलै भलाई भाग २३२ तुलसी कबहुँ न त्यागिये, अपने कुल की रीति । लायकही सों कीजिये, ब्याह बैर अरु प्रीति २३३ ज्ञान गरीबी हरिभजन, कोमल बचन अदोष । तुलसी कबहुँ न छोड़िये, क्षमा शील संतोष २३४ तुलसी सुपुरुष सेइये, जब तब आवै काम । लङ्क बिभीषणको दई, बड़े डुचित में राम २३५ तुलसी निज कीरति चहै, पर की

कीरति खोय। तिनके मुख मसि लागिहै, मिटै न मरि है धोय ३३६ बहुत गई आनन्द सों, रही नेकसी आय। तुलसी चिन्ता मतकरौ, श्रीरघुनाथ सहाय ३३७ तुलसी जगमें आयके, करलीजे दो काम। देबेको टुकड़ा भलो, लेबे को हरिनाम ३३८ तुलसी या संसार में, पंच रत्न हैं सार। साधुमिलन अरु हरिभजन, दयादान उपकार ३३९ बैर सनेह सयानको, तुलसी जो नाहिं जान। सो किमि प्रेम मग पगधरै, पशु बिन पूंछ बिखान ३४० तुलसी तृण जल कूपको, निर्धन निपट निकाज। कै राखै कै सँग चलै, बांह गहेकी लाज ३४१ लिख लिख लिख सब जग लिख्यो, पढ़ि पढ़ि पढ़ि कह कीन। बढ़ि बढ़ि बढ़ि घट घट गये, तुलसी राम न चीन ॥ ३४२ ॥

अथ श्लेष ॥

पीव कचौरी है सखी, पूरी परती नाहिं। मन लडुआ करती फिरी, बिरह दही मनमाहिं ३४३ कचौरी पिय ए

सखी, पकौरी पिय नाहिं। बराबरी कैसे करौं, पूरी परै कि नाहिं ३४४ अमिली बरषै हो रही, पीपर पास न जाउँ। जामुनि भेद न पावहीं, तासों मैं अठिलाउँ ३४५ करना फूल्यो ए सखी, सोपी बिन क्या करना। जो प्रीतम कर ना गहैं, तो जीले क्या करना ३४६ नारंगी हों पीव सों, यह अनारपन मोहि। जो मैं पावे सेवती, सदा सदा फल होहि ३४७ तो ताकति निशि दिन रहै, तूती निपट अजान। लाल कहै सो कीजिये, तज मैना की बान ३४८ सूख छुहारा तन भया, गिरी परै सब देह। किसमिस लिखूं सँदेशरा, नौज लगौ यह नेह ३४९ करछूही बरटाइ नहिं, तवा टाकनी नाहिं। चौके गर वोघारियां, रसन रसोई माहिं ३५० पालक लेने हौं गई, पिय सोया पाया। मैं थी निपट अजान, लाल मैं चूक जगाया॥ ३५१॥

सो० कीकर पाकर तार, जामन फलसा आमिला।
सेव कदम कचनार, पीपल रत्ती तू न तज॥३५२॥

अथ प्रश्नोत्तर ॥

कहा न अबला करिसकै, कहा न सिन्धु समाय। कहा न पावक में जरै, काल काहि नहिं खाय ३५३ सुत नहिं अबला करिसकै, मन नाहिं सिन्धु समाय। धर्म न पावक में जरै, नाम काल नहिं खाय ३५४ प्रीतम या कलिकाल में, कह ऐसे को आहि। एक बस्तु जिहि सौंपिये, दे दश गुण करि ताहि ३५५ सुनो अर्थ मन मोहनी, है यह धरा सुभाइ। बोये एकै बीजके, दे दश गुण करि ताहि ३५६ ऐसो बहुभख कौन है, खात जो नाहिं अघाय। खात खात भोजन घटै, तब आपहि मरिजाय ३५७ बहु भख ज्वाला जानिये, तृण लकड़ी बहु खाय। जब भोजन घट जातहै, तब सीरी ह्वै जाय ३५८ दृग मूंदे सब देखिये, कौन मुकुर सो ईठ। जो चख खोल निहारिये, कछू न आवै दीठ ३५९ वह स्वप्ने को मुकुर है, सोवत सब दिखराय। जागे कछु सूझै नहीं, जब दृग द्वै

खुल जाय ३६० रहत भाकसी में सदा, चिन्ता कछु न जनाय। रुदन करै छूटै जबै, वाको नाम बताय ३६१ बालक वाको नाम है, गर्भ भाकसी जान। जब निकसै तब रोय है, वाको यही बखान ३६२ तिय बिगार नर शिरपरै, नर बिगार शिर तीय। ए चारोंही पूछिये, कहौ सोच के जीय ३६३ भूमि बिगारत श्वानिनी, नाम श्वान को लेइ। हानिकरै मंजार सो, दोष मँजारी देइ ३६४ न्यारे न्यारे पुरुष हैं, सकल होहिं इक ठाम। तब सब कोऊ कहत हैं, नारी उन को नाम ३६५ मनके तबलौं पुरुषहैं, न्यारे न्यारे आहि। धागे माहिं परोइये, माला कहिये ताहि ३६६ न्यारी न्यारी नारि हैं, मिलैं सो पुरुषन माहिं। तब सब कोउ नर भाखिये, नारी कहियत नाहिं ३६७ अश्व अश्विनि इकसंग हैं, जबहि कहत दल होय। कहत सबै घोड़ा जुरे, घोड़ी कहत न कोय॥ ३६८॥

अथ कुण्डलिया॥

बैरी बँधुवा बानिया, ज्वारी चोर लवार। व्याभिचारी रोगी ऋणी, नगरनारिकोयार। नगर नारिको यार, भूलि परतीति न कीजै। जौ सौ सौहैं खाय, चित्त एकौ नहिं दीजै। कहि गिरिधर कबिराय, घरै आवै अनगैरी। हित की कहै बनाय, जानिये पूरो बैरी ३६६ बिना बिचारे जो करै, सो पाछे पछिताय। काम बिगारै आपनो, जगमें होय हँसाय। जग में होय हँसाय, चित्तमें चैन न पावै। खान पान सनमान, राग रँग मनहिं न आवै। कह० दुःखकछु टरत न टारे। खटकतहै जिय माहिं, कियो जो बिना बिचारे ३७० बीती ताहि बिसारदे, आगे की सुधिलेय। जो बनि आवै सहजमें, ताही में चितदेय। ताही में चित देय, बात जोही बनिआवै। दुर्जन हँसे न कोय, चित्तमें खेद न पावै। कह० यही कर मन परतीती। आगे को सुखहोय, समुझ बीती सो बीती ३७१ साईं ये न बिरु·

द्धिये, गुरु परिडत कबि यार। बेटा बनिता पौरिया, यज्ञकरावनहार। यज्ञकरावनहार, राज मन्त्री जो होई। बिप्र परोसी वैद्य,आपको तपै रसोंई। कह०यहै कैसी समझाई। इन तेरह तें तरह दिये, बनि आवै सांई ३७२ साई अपने चित्तकी, भूल न कहिये कोय। तबलग मनमें राखिये, जबलग कारज होय। जबलग कारज होय, भूल कबहूं नहिं कहिये। दुर्जन ताती होय, आप सीरे ह्वै रहिये। कह० बात चतुरन के ताँई। करतूती कहि देत, आप कहिये नहिं साँई ३७३ चिन्ता ज्वाल शरीर बन, दावा लगि लगि जाय। प्रकट धुआं नहिं देखिये, उर अन्तर धुँधुवाय। उर अन्तर धुँधुवाय, जरै ज्यों कांचकी भट्टी। जरगो लोहू मांस, रहगई हाड़ की ठट्टी। कह० सुनो हो मेरे मिन्ता। वे नर कैसे जियैं, जाहि तन व्यापत चिन्ता ३७४ राजाके दरबारमें, जैये समयो पाय। साँई तहां न बैठिये,जहँ कोउ देय उठाय। जहँ कोउ देय उठाय,

बोल अनबोले रहिये । हँसिये ना हहराय, बात पूछे ते कहिये । कह० समय सों कीजे काजा । अतिआतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहै राजा ३७५ कृतघन कबहुँ न मानहीं, कोटिन करो जो कोय । सरबस आगे राखिये, तऊ न अपनो होय । तऊ न अपनो होय, भले की भली न मानै । काम काढ़ि चुप रहै, फेरि तिहिं नाहिं पिछानै । कह० रहत नितही निर्भय मन । मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालच कृतघन ३७६ जाकी धन धरती लई, ताहि न लीजै सङ्ग । जो सँग राखेही बनै, तो करि राख अपङ्ग । तो करि राख अपङ्ग, फेरि फरकै सो न कीजे । कपट रूप बतराय, ताहि को मन हरि लीजे । कह० खटक जैहै नहिं ताकी । कोटि दिलासा देउ, लई धन धरती जाकी ३७७ साईं अपने भ्रात को, कबहुँ न दीजे त्रास । पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास । सदा राखिये पास, त्रास कबहूं नहिं दीजे । त्रास दियो लङ्केश तासु की गति सुनि

लीजे । कह० राम सों मिलियो आई । पाय बिभीषण राज, लङ्कपति बाज्यो साईं ३७८ साईं बेटा बाप के, बिगरे भयो अकाज । हरनाकुश अरु कंस को, गयो दुहुनको राज । गयो दुहुनको राज, बाप बेटा के बिगरे । दुशमन दावादार, भये महि मण्डल सगरे । कह० उन्हें काहू न बताई । पिता पुत्र की रारि, लाभ एकौ नहिं साईं ३७६ साईं नदी समुद्र को, मिली बड़पनो जानि । जाति नाश भइ मिलतही, मान महत की हानि । मान महत की हानि, कहो अब कैसी कीजे । जल खारी है गयो, ताहि कहु कैसे पीजे । कह० कच्छ मच्छ न सकुचाईं । बड़ो फजीहतचार, भयो नदियनको साईं ३८० साईं सन अरु दुष्टजन, इनको यही स्वभाव । खाल खिंचावैं आपनी, परबन्धन के दाव । परबन्धन के दाव, खाल अपनी खिंचवावैं । मुण्ड काटिके कुटिय, तऊ पर बाज न आवैं । कह० जरे अपनी कुटिलाई । जलमें गिरि सड़

गये, तऊ छोड़ी न खुटाई ३८१ साईं समय न चूकिये, यथाशक्ति अनुमान। को जानै को आय है, तेरी पौरि प्रमान। तेरी पौरि प्रमान, समय असमय तकि आवै। ताको तू मन खोलि, अङ्कभरि कण्ठलगावै। कह० सबै यामें सधि आई। शीतल जल फल फूल, समय जिन चूको सांई ३८२ साईं हरि ऐसी करी, बलिके द्वारे जाय। पहिले हाथ पसारिके, बहुरि पसारे पाय। बहुरि पसारे पाय, मतो राजा ने बतायो। भूमि सबै हरिलई, बांधि पाताल पठायो। कह० राव राजन के ताईं। छल बल करि पर भूमि, लेतको तृपत्यो साईं ३८३ साईं पुर पाला पर्यो, आसमान ते आय। पंगुहि अन्धे छोड़ि के, पुरजन चले पराय। पुरजन चले पराय, अन्ध इक मतो बिचार्यो। पंगु कन्ध पै लियो, दृष्टि वाकी पग धार्यो। कह० मते ह्वै चलिये साईं। बिना मते को राज, गयो रावण की नाईं ३८४ सोना लेने पी गये, सूनो करि गये देश।

सोना मिला न पी फिरे, रूपा होगये केश। रूपा होगये केश, रूप सब शेय गँवायो। घर बैठी पछिताय, कन्त अजहूं नहिं आयो। कह० लोन बिन सबै अलोना। जब यौवन ढलि जाय, कहा ले करिये सोना ३८५ मोती लेने पी गये, खार समुन्दर तीर। मोती मिले न पी मिले, नयनन टपकत नीर। नयनन टपकत नीर, पीर अब कासों कहिये। बीते बारह मास, पिया बिन घरही रहिये। कह० सांझ डारत सगुनौती। जर जावै वह सिन्धु, जहां उपजत हैं मोती ३८६ हीरा अपनी खान को, मनहीं मन पछताय। गुन कीमत जानी नहीं, तहां बिकानो आय। तहां बिकानो आय, छेद करहासों बांध्यो। मीठो लगै न मांस, लोन बिन फूहर रांध्यो। कह० धरो कैसे कै धीरा। गुन कीमत घट गई, यही कहि रोयो हीरा ३८७ साईं अगर उजार में, जरत महा पछताय। गुनगाहक कोई नहीं, जाहि सुबास सुहाय। जाहि सुबास सुहाय,

सुतौ बन में कोउ नाहीं। कै गीदर कै हिरन, सुतौ समझत कछु नाहीं। कह० बड़ो दुख यहै गुसाईं। अगर आकको राख, भई एकै मिलि साईं ३८८ साईं हंस न आवहीं, बिन सरवर जलपास। निरफल तरवर ते डरैं, पंछी पथिक उदास। पंछी पथिक उदास, छांह बिश्राम न पावैं। जहां प्रफुल्लित कमल, भ्रमर तहँ भूल न आवैं। कह० जहां यह बूझ बड़ाई। तहां न करिये सांझ, प्रात ही चलिये सांई ३८९ हंसा उड़ि दिश को चले, सरवर मीत जुहार। हम तुम कबहूं भेटिहैं, संदेशन ब्योहार। संदेशन ब्योहार, भरयोपूरो जलरहियो। जीव जन्तु चिर जियो सदा उत्तम फल लहियो। कह० केल की रही न मंसा। दै अशीष उड़ि चले, देश अपने को हंसा ३९० हंसा यहँ रहिये नहीं, सरवर गयो सुखाय। जो रहिये तो शीश पर, बगुला देहैं पांय। बगुला देहैं पांय, कीच कारे ह्वै जैहो। लोक हंसाई होय, कहा कछु ईजत पैहो। कह०

मोहिं इक येही संसा । याहू ते कछु घाट, औरही है है हंसा ३६१ सांई एकै गिरि धस्यो, गिरिधर गिरिधर होय। हनूमान बहु गिरिधस्यो, गिरिधर कहै न कोय । गिरिधर कहै न कोय, हनू धौलागिरि लायो । ताको किनका टूटि, पस्यो सो कृष्ण उठायो । कह० बड़नकी बड़ी बड़ाई । थोरेही यश होय, यशी पुरुषनको सांई ३६२ नयना जब परवश परैं, उत्तम गुण सब जायँ। वे फिर २ सीरी करैं, ये फिर फिर लपटायँ। ये फिर फिर लपटायँ, नेत्र बहुरो भरि आवैं । खान पान सुख त्याग, रात दिनहीं दुख पावैं । कह० सुनौ तुम श्रवणन बैना। लोग जु देयँ कलङ्क, परैं जब परवश नैना ३६३ साईं सुमन पलाश पर, सुआ रह्यो जो आय। लाल कलीसी चोंच पर, मधुकर बैठ्यो जाय । मधुकर बैठ्यो जाय, सुआ ततकाल बचायो। कोटि कष्ट दुख पाय, मरूंकर छूटन पायो । कह० बेग घर बजै बधाई। दीजै बिदा पलाश, जियत घर

जैये साँई ३६४ साँई तेली तिलन सों, कियो नेह निर्बाहि। छांटि फटक उज्ज्वलकरै, दई बड़ाई ताहि। दई बड़ाई ताहि, पञ्च यह सिगरे जानी। दे कोल्हू में पेरि, करी है इकतर घानी। कह० मया की यही बड़ाई। अमया सबते भली, मान मति मेरी साईं ३६५ साईं सुआ प्रवीन अति, बानी बदत बिचित्र। रूपवन्त गुण आगरो, रामनाम सों चित्त। रामनाम सों चित्त, और देव न अनुराग्यो। जहां जहां तू गयो, तहाँ तू नीको लाग्यो। कह० सुआ चूक्यो चतुराई। सेमल सेयो बृथा, बिश्वास करि भूल्यो साईं ३६६ धोखे दाड़िम के सुआ, गयो नारियल खान। खम खाई पाई सजा, फिर लाग्यो पछतान। फिर लाग्यो पछतान, बुद्धि अपनीको रोयो। निर्गुणियनके पास, बैठ गुण अपनो खोयो। कह० कहूं जैये नहिं ओखे। चोंच खटकै टूटि, सुआ दाड़िमके धोखे ३६७ गदहा थोरे दिनन में, खूंद खाय इतरात। अफरान्यो मारन कहै, एराकी के लात। एराकी

के लात, देत शङ्का नहिं आनै। एराकी सहि रहत, ताहि कोऊ नहिं जानै। कह० रहैगी कौलौं दुबहा। एराकी की लात, फेर कैसे सहै गदहा ३९८ महुआ नित उठ दाख सों, करत मसलहत आय। हम तुम सूखे एकसे, हूजत हैं रसराय। हूजत हैं रसराय, बिलग जनि याको मानौ। मधुर मिष्ट हम अधिक, कछू जिन जियमें जानौ। कह० कहत साहब सों रहुआ। तुम नीची कुल बेल, वृक्ष हम ऊंचे महुआ ३९९ गुलतुर्रा सों जायके, बाद करै जो करील। हम तुम सूखे एकसे, पूँछ देखिये भील। पूँछ देखिये भील, भेद जो जानै मेरो। तुहूँ पूछ बुलवाय, भेद जो जानै तेरो। कह० नतरहौं करिहौं हुर्रा। अब जिन भूल गुमान, करै फिर हौ गुलतुर्रा ४०० बगुला झपटत बाज पै, बाज रहै शिर नाय। कुलहा दीने पग बँधे, खोंटे दे फहराय। खोंटे दे फहराय, कहे जो जो मन आवै। कुलहा लै पग छोरि, धनी बिन कौन छुड़ावै। कह०

अरे तू सुन खग बगुला। समयो पलट्यो जान, बाज पै झपटै बगुला ४०१ कौआ कहत मराल सों, कौन जाति को गोत। तोसों बदरूपी महा, कोउ न जगमें होत। कोउ न जगमें होत, कुटिल मैले मल खाने। ऊसर बैठ मर्याद,भ्रष्ट आचार न जाने। कह० कहांते आयो हौआ। धन्य हमारो देश, जहां सज्जन जन कौआ ४०२ साईं घोड़न के अछत, गदहन आयो राज। कौआ लीजे हाथ में, दूरि कीजिये बाज। दूरि कीजिये बाज, राज ऐसोही आयो। सिंह कैद में कियो, स्यार गजराज चढ़ायो। कह० जहां यह बूझ बड़ाई। तहां न कीजे सांझ, सबेरेहि चलिये सांईं ४०३ भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख सुख सहौ शरीर। जब लग फूलै केतकी, तब लग बिरम करीर। तब लग बिरम करीर, हर्ष मन में नाहिं कीजे। जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजे। कह० होय जिन जिय में बौरा। सहै दुःख अरु सुःख, एक

सज्जन अरु भौंरा ४०४ हिरना बिरझेउ सिंह सों, औझर खुरी चलाय। झारखण्ड झीनो पर्यो, सिंहा गयो बराय। सिंहा गयो बराय, समौ सामर्थ्य बिचार्यो। कुलहिं कालिमा लाय, हँस्यो हँसके कहि हार्यो। कह० मोहिं याही बन फिरना। आज गैर कर जाउँ, कालि मैं हौं कै हिरना ४०५ पानी बाढ़्यो नाव में, घरमें बाढ़्यो दाम। दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम। यही सयानो काम, नाम ईश्वर को लीजे। परस्वारथ के काम, शीश आगे धरि दीजे। कह० बड़न की याही बानी। चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी ४०६ मैंना जानौं जीवकी, तोता की दिन रैन। बक बकरी केता कहूं मोर कहां ते चैन। मोर कहां ते चैन, दुनियमें तीतर जानो। गलि गलि आई बाज, मौन ताही ते ठानो। कह० सुने कुरङ्ग के बैना। पिय गल डारी बाहँ, हंस मुख देखौ नैना ४०७ हुक्का बाँध्यो फेंटमें, गहि लीनी नै हाथ।

चले राह में जात हैं, बाँधि तमाकू साथ। बाँधि तमाकू साथ, गैलको धंधा भूल्यो। गइ सब चिन्ता दूरि, आग देखत मन फूल्यो। कह० जु यमको आयो रुक्का। जीव लै गयो काल, हाथ में रह गयो हुक्का ॥ ४०८ ॥

अथ बरवा ॥

हरिपद रुचिर तरनियां चढ़ मन मोर। तर भवसागर अबहीं रहे दिन थोर १ मोहन के मुख सोहन जोहन जोग। रूप अशन अँखियनको भस्मक रोग २ ऊंच जाति ब्राह्मणियां बरणि न जाय। दौरि दौरि पालागी शीश छुआय ३ बाड़ि २ आंख बरिनियां हिय हरि लेय। पतरी के अस होब करेजवा देय ४ घाट बांट लै बानिनि हाट बइठ। कहत काहु नहिं जानी बतियन मीठ ५ नीक जाति कुरमी की खुरपी हाथ। आपन खेत निवारै पीके साथ ६ अहिरिनि मनकी गहिरी उतर न देय। नैना करै मथनियां मनमथलेय ७ हलुआ अस हलवनियां गलवा

लाल। लाल २ है जुबना नैन रसाल ८ टेढ़ मांग नाइन की नहरन हाथ। फिर पाछे जो हेरै महतौ साथ ६ चीकन गात तेलिनियां बरनि न जाय। चितवत रूप अनूप द्रष्टि लपटाय १० मैली एक धोबिनियां ऊजर गांव। भूली कन्त बिन कलपति लै लै नांव ११ झमक चली कसइ-नियां दै दै सैन। धरै करेजवा छुरियां करि करि पैन १२ नीक जाति तुरकिनकी बहुतै लाज। जानै पियकी सेवा और न काज १३ सुन्दरि तरुणि तमोलिनि तरवन कान। हेरै हँसै हरै मन फेरै पान १४ भरभूजिन कन भूजहि बैठि दुकान। फुटका करत बिहँसिके बिरही प्रान १५ कलवारी मदमाती काम कलोल। भरि भरि देत पियलवा महा ठठोल १६ परदवार तन नाजुक कैथिनि नारि। शङ्क धरै घूंघुट दृग चली निहारि १७ अचरज करत लुहरिया पिय के पास। जाहि छुवत बिन जियके लेय उसास १८ खेल फाग धन बहुरी धूरि उड़ान।

दिखहुं न कोय २६ बोली आनि कोयलिया मधुरी बान।
महुआ रोवै ठाढ़ आम बौरान ३० प्रेम प्रीति को बिरवा
चलेहु लगाय। सींचनकी सुधि लीजो बिसरि न जाय ३१
अस मन होय बलम अब कबहुँ न जाय। रखिये रातहु
दिवस हिरदवा लाय ३२ पात पात कर लूटिस बिपन
समाज। राजनीति यह कसि कसि कस ऋतुराज ३३
चलत न शोच करसि सखि सगुन सभाग। है ससुरार
तुम्हारिहु घन बन बाग ३४ करि बरन कैलिया कुहकति
आन। अम्बा चढ़ि डरपावति पिय बिन जान ३५ भले
भेट बालमसन भटकिहु आय। धाय धाय बन खाय बेष
नहिं जाय। बालम चलत न भेटे छतियाँ लाय। सोइ
कसक करेजवा कसकति आय ३६ बदरन घरी घनुहियाँ
करत अचेत। बुँदियन के करि बान करेजवा देत ३७
नैनन्भीतर मितवा रहत जो ठाढ़। निकसन कबहुँ न भे-
टिस अस मन गाढ़ ३८ हरद बरन मोरी देही पियहि

बियोग । कौन बिथा मोहिं बूझहु बाउर लोग ॥ ३६ ।

अथ अरल ॥

भज सूआ हरिनाम कि बैठा ताक में । दिना चार का रङ्ग मिलैगा खाक में । साहिब बेग सँभार काल सों रार है । यम के हाथ गुलेल फटका पार है १ यह दुनियाँ बाजीद पलक का पेखना । यामें बहुत बिकार कहो क्या देखना । सब जीवन का जीव जगत आधार है । पर हां बाजीदा जो न भजै भगवन्त छठी में छार है २ दो दो दीपक बार महल में सोवते । नारी से करि नेह जगतमहँ जीवते । सोंधा तेल लगाय पान मुख खांयगे । बिना भजन भगवान के मिथ्या जांयगे ३ रामनाम की लूट फबै है जीवको । निशि बासर कर ध्यान सुमिर तू पीवको । यहै बात फिर सिद्ध कहत सब गांवरे । पर हां बाजीदा अधम अजामिल तरे नारायण नांवरे ४ गाफिल हूये जीव, कहौ न यों बनत है । या मानुष के सांस जु कोउ

गिनत है। जाग लेय हरिनाम, कहांलौं सोय है। पर
हां बाजीदा चाकी के मुख पस्यो सु मैदा होय है ५ आज
सुनै कै काल कहत हौं तुझ को। भावै बैरी जान जीव
तू मुझ को। देखत अपनी दृष्टि खता क्यों खात है। यहाँ
बाजीदा लोहे कैसो ताव जन्म यह जात है ६ केते अर्जुन
भीम जरा जसवन्त से। केते गिने अशङ्क बली हनुमन्त
से। जिनकी सुन सुन हांक महागिरि फाटते। परहां
बाजीदा तिन घर खायो काल जो इन्द्रहि डाटते ७ हौं
जानौं कछु मीठ अन्त कह तीत है। देख्यो हृदय बि-
चार देह यह अनीत है। पान फूल रस भोग अन्त कह
रोग है। परहां बाजीदा प्रीतम प्रभु के नाम बिना सब
सोग है ८ देख तमाशा अजब जो लगी पठाननू।
होया खड़ा निहङ्ग पकड़ सूजाननू। लगा लुटावन आप
आपना सर्वजर। परहां बाजीदा कौन साहिब नू अक्खे
यों नहिं यों कर ९ नबियादा सरताज खंभदर गाहदा।

सब नादा मखबूल रसूल खुदाहदा। उम्मत देयुत जी-
वन उसदी जानमर। परहां बाजीदा कौन साहिब नू
अक्खे यों नहिं यों कर १० बिना बास का फूल न ताहि
सराहिये। बहुत मित्र की नारि सों प्रीति न चाहिये।
शठ साहिब की सेव कबहुं नहिं कीजिये। परहां बाजीदा
बिद्याबिद अरु जिन्द अकाज न दीजिये ११ एक राम
कहत कलमा न दूबा कोइरे। अर्द्ध नाम पाषान भरा
निरलोइरे। कर्म कि केतिक बात बिलग ह्वै जांइगे।
परहां बाजीदा हाथी के असवार कुत्ते क्यों खांइगे १२
कुञ्जरमन में मत्त मरै तो मारिये। कामिनि कनक कलेश
टरै तो टारिये। हरिभक्तन सों नेह पलै तौ पालिये। परहां
बाजीदा रामभजन में देह गलै तो गालिये १३ जेती
बोली बानी से तौ बहरही। हृदय कपट की बात तो मुख
सों का कही। बोले बोली बोल बुलाई पीउ की। परहां
बाजीदा ऊपर की सब झूंठ फलैगी जीव की १४ घड़ी

घड़ी घड़ियाल पुकारै कही है। बहुत गई है अवधि अल्प ही रही है। सोवे कहा अचेत जाग जग पीउरे। परहां बाजीदा चली है आज कि काल्ह बटाऊ जीवरे १५ जो जिय में कछु ज्ञान पकरहू मन्न को। लिपटहि हरि को हेत सुजावत जन्न को। प्रीति सहित दिन रैन राम मुख बोलई। परहां बाजीदा रोटी लिये हाथ नाथ सँग डोलई १६ पानौ सगैन ताहि तहां लौं गोयरे। रीते हाथन जाय जगत सब जोयरे। यह माया बाजीद चलै क्या साथरे। बहते पानी बीर परवाली हाथरे १७ पाहन कोरारहै बरसते मेह में। घाल धरी बाजीद दुष्टता देहमें। उसै औचका आय भूठ गहिरोइये। परहां बाजीदा सर्पहि दूध पिलाय वृथा ही खोइये १८ बदन बिलोकित नयन भई हौं बावरी। धारे दण्ड बिभूत पगन द्वै पावरी। कर जोगिनको भेष सकल जग डोलिहौं। परहां बाजीदा ऐसो मेरे नेम पीव पिउ बोलिहौं १९ एकै नाम अनन्त

कहूं कै लीजिये। जन्म २ के पाप चुनौती दीजिये। लेकर चिनगी आग धरै तू अब्बरे। परहां बाजीदा कोठी भरी कपास जाय जल सब्बरे॥ २०॥

अथ छप्पय॥

तिलक भाल बनमाल अधिक राजत रसाल छबि। मोरमुकुट की लटक चटक बरनत अटकत कबि। पीताम्बर फहराय मधुर मुसुकाय कपोलन। रच्यो रुचिर मुख पान तान गावत मृदु बोलन। रति कोटि काम अभिराम अति दुष्ट निकन्दन गिरिधरन। आनन्द कन्द ब्रज चन्द प्रभु सुजय जय जय अशरण शरण १ मोर मुकुट नग जटित कर्ण कुण्डल हेम झलकैं। मृग मद तिलक ललाट कमल लोचन दल पलकैं। घूँघरवारी अलक कौस्तुभ कण्ठ बिराजै। पीत बसन बनमाल मधुर मुरली धुनि बाजै। करत कोटि आभा बरन सुचन्द सूर्य देखत लजत। ब्रह्मदेव दे भक्त जन सुश्याम रूप प्रीतम

सजत २ चतुरानन सम बुद्धि विदित जो होय कोटि घर। एक एक घर प्रतिनिशीश जो होय कोटि घर। तीस सीस प्रति बदन कोटि करतार बनावै। एक एक मुख माहिं रसन फिर कोटि लगावै। रसन रसन प्रति शारदा कोटि बैठि बानी कहहिं। महिजन अनाथ के नाथ की महिमा तबहुँ न कहि सकहिं ३ भूमि परत अवतरत करत बालक बिनोद रस। पुनि यौबन मद मत्त तरुन इन्द्री अनङ्ग बस। बिषय हेतु जड़ फिरत बहुरि पहुँच्यो वृद्धापन। गयो जन्म गुन गनत अन्त कछु भयो न आपन। थिररहत न कोउ नरपति नवल रहत एक चहुँ युग सुयश। सोइ अजर अमर नरहरि निरख जोइ पियत भगवन्त रस ४ बिमल चित्त करि मित्र शत्रु छल बल वश किज्जिय। प्रभु सेवा वशकरिय लोभवन्तहि धन दिज्जिय। युवति प्रेम वश करिय साधु आदर वश आनिय। महाराज गुन कथन बन्ध समरस मन मानिय। गुरु नमत

शीश रस सों रसिक बिद्या बल बुधि मन हरिय। मूरख बिनोद सु कथा बलन शुभ सुभाव जग वश करिय ५ याचक लघु पद लहै कामतुर जो कलङ्क पद। लोभी दुर्यश लहै अशन लालची लहै गद। मूरख औगुन लहै लहै पढ़ पढ़ गुन पण्डित। सूर सुरन यश लहै रहै रनमें महि मण्डित। निर्बान सुपद योगी लहै जो न गहै ममता सुमति। सुख भगत यतन जन लहै करे जु नौ बिधि भक्ति अति ६ धिक मंगन बिन गुनहि गुनहि धिक सुनत न रीझै। रीझक धिक बिन मौज मौज धिक देत जो खीझै। देबो धिक बिन सांच सांच धिक धर्म न भावै। धर्म सुधिक बिन दया दयाधिक अरि कहँ आवै। अरि धिक चित्त न सालई चित धिक जहँ न उदार मति। मति धिक केशव ज्ञान बिन ज्ञान सुधिक बिन हरि भगति ७ न कछु क्रिया बिन बिप्र न कछु कायर जिय क्षत्री। न कछु नीति बिन नृपति न कछु अक्षर बिन मन्त्री। न कछु बाण बिन धाम

न कछु गृह बिन गरुवाई। न कछु कपटको हेत न कछु मुख आप बड़ाई। न कछु दान सनमान बिन न कछु सुभोजन जासु दिन। नर सुनौ सकल नरहरि कहत न कछु जन्म हरि भक्ति बिन ८ यदपि कुसँग सँग लाभ तदपि वह संग न किज्जिय। यदपि धनिक होय निधन तदपि घट प्रकृति न लज्जिय। यदपि दान नाहिं शक्ति तदपि मन मान नर खुट्टिय। यदपि प्रीति उर घटै तदपि मुख उघरन टुट्टिय। सुन सुयश दुवार किवाड़ दे कुयश जमाल न मुक्किये। जिय जाय यदपि भलपन करत तऊ न भलपन चुक्किये ६ तजहु जगत बिन भवन भवन तज त्रिय बिन कीनौ। त्रिय तजहु न सुख देव सुखहि तज सम्पति हीनौ। सम्पति तज बिन दान दान तज जहँ न बिप्रमति। बिप्र तजहि बिन धर्म धर्म तजिये बिन भूपति। तज भूप भूमि बिन भूमि तज दीह दुर्ग बिन जो बसै। तज दुर्ग सुकेशवदास कबि जहां न पूरन जल लसै १०

मूढ़ तपीसम कृती दुष्ट मानी गृहस्थ नर। नरनायक अति आलसी बिपुल धनवन्त कृपण कर। धर्मी दुष्ट सुभाव बेदपाठी अधर्मरत। पराधीन गुनवन्त भूमिपालक बिदेह सत। रोगी दरिद्र पीड़ित पुरुष बृद्ध नारि नर गृद्ध चित। एते बिडम्ब संसारमें इन सबको धिक्कार नित ११ तिय बल यौवन समय साधु बल शिव पद सब्बर। नृप बल तेज प्रताप दुष्ट बल बचन अडम्बर। निर्द्धन बल सुमिलाप दान सेवा याचक बल। बानिज बल ब्योपार ज्ञान बल बर बिबेक दल। इमि बिद्या बिनय उदार बल गुन समूह प्रभु बल दरब। परिवार सुबल सबिचार कर होहिं एक सम्मत सरब १२ नरपति मण्डन नीति पुरुष मण्डन मन धीरज। पण्डित मण्डन बिनय ताल रस मण्डन नीरज। कुल तिय मण्डन लाज बचन मण्डन प्रसन्न मुख। मति मण्डन कबि कर्म साध मण्डन समाध सुख। भुज बल मण्डन क्षमा गृहपति मण्डन बिपुल धन। मण्डन

सिधरुच सन्त कहि काया मगडन बल न धन १३ ज्ञान-
वन्त हठ गहै निधन परिवार बढ़ावै। बँधुआ करै गुमान
धनी सेवक ह्वै धावै। पण्डित किरिया हीन रांड़ दुर्बुद्धि
प्रबानै। बृद्ध न समझै न धर्म नारि भर्तहि रिपु मानै।
कुलवन्त पुरुष कुल बिधि तजैं बन्धु न मानै बन्धुहित।
संन्यास धार धन संग्रहै ये जग में मूरख विदित १४ गई
भूमि फिर मिलै बेलि फिर जमै जरे तें। फल फूलन तें
फलैं फूल फूलन्त झरे तें। केशव बिद्या निकट बिकट बि-
सरी फिर आवै। बहुरि होय धन धर्म गई सम्पति फिर
पावै। होय जो शील सुशील मति जगत हेत इमि गा-
इये। प्राण गये फिर मिलै पै पति न गई फिर पाइये १५
सर सर हंस न होत बाजि गजराज न दर दर। तरु तरु
सुफल न होत नारि पतिब्रता न घर घर। तन तन सु-
मति न होत मोति जल बूंद न घन घन। फन फन मनि
नहिं होत सर्व मलया नहिं बन बन। कहुँ नर होहिं न

शूर सब नर नर होत न भक्त हर । नरहरि सुकवि कवित्त किय सर्व होहिं नहिं एक सर ॥ १६ ॥

अथ पहेली ॥

इक नारी अरु पुरुष हैं ढेर । सबसे मिलै एकही बेर । दिना चारका अन्तर होय । लिपटे पुरुष छुड़ावै सोय १॥ कंघी ॥ पानी में निशि दिन रहै, जाके हाड़ न मास । काम करै तरवार को, फिर पानी में बास २ ॥ कुम्हार का डोरा ॥ जल में रहै झूठ नहिं भाषै बसै सु नगर मँझार । कच्छ मच्छ दादुर नहीं पण्डित करो बिचार ३॥ घड़ी ॥ सोने की वह नारि कहावै । दाल चावल के मोल बिकावै ४ ॥ कंचनी ॥ श्याम बरन पर हरि नहीं जटा धरे नहिं ईश । ना जाने पिय कौनहै पंख लगाये शीश ५ ॥ कसेरू ॥ बूझ तरुवर अरु आधो नाम । अर्थ करो कै छाँड़ो ग्राम ६ ॥ नीम ॥ जल कर उपजै जलमें रहै । आंखों देखा खुसरो कहै ७ ॥ काजल॥शीशा

जटा पोथी गहै श्वेत बसन गल माहिं। योगी जंगम है नहीं ब्राह्मण पण्डित नाहिं ८॥ लहसुन॥ श्यामबरन पीताम्बर कांधे मुरलीधर नहिं होय। बिन मुरली वह नाद करत है बिरला बूझै कोय ९॥ भौंरा॥ कर बोलै करही सुनै, श्रवण सुनहि नहिं ताह। कहै पहेली बीरबल, सुनिये अकबरशाह १०॥ नाड़ी॥ बांबी वाकी जल भरी ऊपर जारी आग। जबै बजाई बांसुरी निकस्यो कारो नाग ११॥ हुक्का॥ जाके रातन कोंप फल पेड़हि देय जलाय। सो तरुवर बहु फलियां देखौ लोगो आय १२॥ भौचम्पा॥ शीश केश बिन चुटिया तीन। औगुन लेत पराये छीन। जोइ जाय उनके दरबार। ताके मूड़ न राखै बार १३॥ त्रिबेणी॥ रात पड़ै तब पड़नेलागी। दिनको मरी रातको जागी॥ उसका मोती नाम बताया। बूझो तुम मैं कूक सुनाया १४॥ ओस॥ नर नारी हम एकै दीठे। ज्यों ज्यों बोलैं त्यों त्यों मीठे। एक न्हाय

इक सेकन हारा। कह खुसरो नाहिं कीच न गारा १५॥ नगारा॥ श्याम बरण अरु सोहनी फूलन छाई पीठ। सब पुरुषन के गल परत ऐसी लङ्गर ढीठ १६॥ ढाल॥ शिर पर सोहै गङ्ग जल मुण्डमाल गलमाहिं। बाहन वाको बृषभहै शिव कहिये कै नाहिं १७॥रहँट॥ रङ्ग रङ्ग इक पक्षी बना। छोटी चोंच अरु काटै घना। तीस तीस मिलि बिलमें बसैं। जीव नहीं अरु उड़िके डसैं १८॥ तीर॥ देखी एक अनोखी नारि। गुण उसमें इक सब से भारि। पढ़ी नहीं अरु अचरज आवै। मरना जीना तुरत बतावै १९॥ नाड़ी॥ फाट्यो पेट दरिद्री नाम॥ उत्तम घर में वाको ठाम। श्री को अनुज बिष्णु को सारो। पण्डित होय सो अर्थ बिचारो २०॥ शंख॥ नरके पेट जो नारी बसै। पकड़ हिलावै खिल खिल हँसै। पेट फाड़ जब नारी गिरी। मोको लागी प्यारी खरी २१॥ गिरी॥ बारे से वह सब

को भावै । बड़ा हुआ कछु काम न आवै । मैं कह दिया है उसका नाम । अर्थ करौ कै छोड़ो ग्राम २२ ॥दिया॥ चहूं ओर फिरि आई । जिन देखा तिन खाई २३ ॥खाई॥ आधी बूबू सारी रानी । अर्थ करौ कोउ पण्डित ज्ञानी २४ बूरानी ॥ नारी एक शहर में सोई । सभी वस्तु वाके घर होई । खाय कछू नहिं पीवै पानी । लोग कहैं यह खरी दिवानी २५ ॥ खारी ॥ बावरी ॥ बिना बुलाई खरचै दाम । तन गोरी औ अभरन श्याम । आवतही परदेश सिधारी । पहुँची जहां भई अति प्यारी । भरी गई रीती ह्वै आई । तब वह नारि पुरुष कहाई २६ हुण्डी ॥ अरबी कहौं तो पाईना । फारसी कहौं तो आ-ईना । हिन्दी कहत आरसी आवै । कहौ पहेली कौन बतावै २७ ॥ दर्पण ॥ आदि कटेते सब को पालै । मध्य कटे ते सब को पारै । अन्त कटे ते सब को मीठा । सो खुसरो मैं आंखों दीठा २८ ॥ काजल ॥ पक्षी एक श्वेत

औ हस्यो। निशि दिन रहै बाग में पस्यो। ना कछु पीवै ना कछु खाय। अश्व बराबर दौस्यो जाय २९ बकसुआ॥ एक नारि भौंरासी काली। कान नहीं औ पहिरै बाली। नाक नहीं अरु सूंघै फूल। जितना अर्ज उतनाही तूल ३० ॥ ढाल ॥ एक नारि वह है बहु रङ्गी। घरसे बाहर निकसै नङ्गी। उस नारी का यही शिंगार। शिरपर नथुनी मुँह पर बार ३१ ॥ तलवार॥ डाल दीजे। देखा कीजे ३२ ॥ चिक॥ हाथ में लीजे। देखा कीजे ३३ ॥ दर्पण॥ एक नारि करतार बनाई। ना वह क्वारी ना वह व्याही। सूहे रङ्ग सदासी रहै। भाबी भाबी सब जग कहै ३४ ॥ बीरबहूटी ॥ आधा भक्तन मुख बसै आधा गुनियन साथ। बाहि पसारी देत हैं पुड़ी बांध के हाथ ३५ ॥ हरताल॥ खेत में उपजै सब कोउ खाय। घर में होय तो घर बहि जाय ३६ ॥ फूट ॥ लाग कहूं लागू नहीं बरजत

लागै धाय। कही पहेली एक मैं दीजे चतुर बताय३७॥ होंठ ॥ लक्ष्मीपति के कर बसै, पांच अक्षर के माहिं। पहिलो अक्षर छोड़के, सो दीजै तुम नाहिं ३८॥ दर्शन ॥ एक अचम्भा देखो चल। सूखी लकड़ी लागे फल। जो कोई उस फलको खाय। पेड़ छोड़ वह अन्त न जाय ३९॥ बरछी ॥ योगी एक मढ़ी में सोवै। मद पीवै अरु मस्त न होवै। जब बालका कान में लागा। योगी छोड़ मढ़ी को भागा ४०॥ गोला ॥

अथ मुकरी ॥

अर्द्ध निशा वह आयो भौन। सुन्दरता बरणै कहि कौन। निरखतही मन भयो अनन्द। क्यों सखि सज्जन ना सखि चन्द १ घुल गई गांठ न खोले खुलै। जहां तहां मेरे सँग डुलै। हिये बिराजत होय न भार। क्यों सखि सज्जन नहिं सखि हार २ दासी ते मैं मोल मँगायो। अङ्ग अङ्ग सब खोल दिखायो। वासों मेरो भयो

जु मेल। क्यों सखि सज्जन ना सखि तेल ३ मैं अपनो मन दीन्हों ऐन। सुन्दर रूप सुहावै बैन। ढिग तें कबहुँ न करिहौं जूझा। क्यों सखि सज्जन ना सखि सूआ ४ वा बिन चित्त चहूं दिशि डोलै। चातक ज्यों पुनि पुनि पिय बोलै। परलय हो आवै नहिं गेह। क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ५ शोभा सदा बढ़ावनहारा। आँखन तें छिन होत न न्यारा। आठ पहर मेरो मन रञ्जन। क्यों सखि सज्जन ना सखि अञ्जन ६ रात दिना जाको है गौन। खुले द्वार आवै मेरे भौन। वाको हरष बताऊं कौन। क्यों सखि सज्जन ना सखि पौन ७ बाट चलत मेरो अँचरा गहै। मेरी सुनै न अपनी कहै। ना कछु मोसों झगरा झांटा। क्यों सखि सज्जन ना सखि कांटा ८ बाट चलतमें पड़ा जो पाया। खोटा खरा नहीं परखाया। हाथ लगै तब होवै कैसा। क्यों सखि सज्जन ना सखि पैसा ६ देखन में वह गांठ

गठीला। चाखन में वह अधिक रसीला। मुख चूमौ तो रसका भाँड़ा। क्यों सखि सज्जन ना सखि गाँड़ा १० सगरी रैन मेरे सँग जाग्यो। भोर भये ते बिछुरन लाग्यो। वाके बिछुरत फाटै हिया। क्यों सखि सज्जन ना सखि दिया ११ छठे छमासे मो घर आवै। आप हिलै अरु मोहिं हिलावै। नाम लेत आवै मोहिं शङ्का। क्यों सखि सज्जन ना सखि पङ्खा १२ निशि दिन मेरे ऊपर रहै। दोऊ कुच लै गाढ़े गहै। उतरत चढ़त करत झक-झोली। क्यों सखि सज्जन ना सखि चोली १३ मोको तो हाथीको भावै। घट बढ़ हो तो नाहिं सुहावै। ढूँढ़ ढूँढ़के ल्याई पूरा। क्यों सखि सज्जन ना सखि चूरा १४ सगरी रैन छाती पर राखा। उसका रस कस मैंने चाखा। भोर भया तब दिया उतार। क्यों सखि सज्जन ना सखि हार १५ हरित रङ्ग मोहिं लागत नीको। वा बिन सब जग लागत फीको। उतरत चढ़त मरोरत अङ्ग।

क्यों सखि सज्जन ना सखि भङ्ग १६ लम्बी लम्बी डगों जु आवै। सारे दिनकी हौंस बुझावै। उठके चला तो पकड़ा खूंट। क्यों सखि सज्जन ना सखि ऊँट १७ दुर दुर करूं तो दौड़ा आवै। खन आंगन खन बाहर जावै। देहरी दौड़ कहीं नहिं सुत्ता। क्यों सखि सज्जन ना सखि कुत्ता १८ छोटा मोटा अधिक सुहाना। जो देखै सो होय देवाना। कबहूँ बाहर कबहूँ अन्दर। क्यों सखि सज्जन ना सखि बन्दर १६ अति सुरङ्ग है रङ्ग रँगीलो। है गुणवन्त बहुत चटकीलो। रामभजन बिन कभी न सोता। क्यों सखि सज्जन ना सखि तोता २० आठपहर मेरे ढिग रहै। मीठी प्यारी बातैं कहै। श्यामबरण अरु राते नैना। क्यों सखि सज्जन ना सखि मैना २१ जब आवै तब जल भरिलावै। तन मनकी सब तपन बुझावै। मनका भारी तनका छोटा। क्यों सखि सज्जन ना सखि लोटा २२ धमक चढ़ै सुध बुध बिसरावै। दाबत जांघ

बहुत सुख पावै। अतिबलवन्त दिनन को थोड़ा। क्यों सखि सज्जन ना सखि घोड़ा २३ अतिसुन्दर जग चाहत जाको। मैं भी देख भुलानी वाको। देखत रूप भयो जो टोना। क्यों सखि सज्जन ना सखि सोना २४ निशि दिन आंगन ऊभो रहै। छांह धूप सब ऊपर सहै। वाको देखे लगै न भूख। क्यों सखि सज्जन ना सखि रूख॥ २५॥

अथ हियहुलास॥

प्रथमै ताको सुमिरिये, जिन दीन्हों गुरु ज्ञान। ज्ञानी गुण गावैं सदा, ध्यानी धरैं जु ध्यान १ अम्बर थाँभ्यो थम्भ बिन, धरती अधर धराव। मनुषरूप ह्वै अवतर्यो, देखत कर्त्तिको भाव २ भावित तीनों लोक में, नाहीं दूजो कोय। मन में निश्चय जानिये, होनी होय सो होय ३ अब कछु बरणों तीन रस, रसही जगको जीय। रसना रसकी जस कहै, सुनि सुख पावै हीय ४ हिय

हुलास या ग्रन्थ को, राख्यो नाम बिचार। यामें सिगरे राग के, रचे रूप शृङ्गार ५ आदि नाद अनहद भयो, तातें उपज्यो बेद। पुनि पायो वा बेद में, सकल सृष्टिको भेद ६ प्राण पक्यो षटराग सुनि, तब उपज्यो बैराग। बारे तरु में बृद्ध को, ताते भावै राग ७ जग को धीरज राग है, राग रूपकी खान। तन मज्जन सो राग है, राग प्रेम को प्रान ८ सुख को दाता राग है, राग रूप को भोग। याही ते सब कहत हैं, राग रङ्ग से योग ९ राग हरै सब रोग को, राग चहै रस भोग। बिरही झुरै जु संग को, उपजै महाबियोग ॥ १० ॥

अथ रागरागिनी नाम ॥

भैरों की धुनि भैरवी, बंगाली बैरारि। मधु माधवी अरु सिन्धवी, पांचौ बिरहिन नारि ११ टोड़ी गौरी गुनकली, खम्बावति को कब्ब। मालकोसकी रागिनी, गावत अति दुर्लब्ब १२ रामकली पटमञ्जरी, और कहौं

दे साख। ये नारी हिंडोल की, ललित बिलावल राग १३
देशी नट अरु कान्हड़ा, केदारा कामोद। दीपक की
प्यारी सबै, महा प्रेम परमोद १४ धनासिरी आसावरी,
मारू बहुरि बसन्त। सिरी रागकी रागिनी, मालसिरी है
अन्त १५ भौपाली अरु गूजरी, देशी कार मलार।
तनक बियोगिन कामिनी, मेघराग की नार॥ १६॥

अथ रागगुनवर्णन॥

भैरों सुर सुरता कहै, कोल्हू चलै जु धाय। मालकोस
तब जानिये, पाहन पघिलब जाय १७ चलै हिंडोलो
आप ते, सुनत राग हिंडोल। बर्षै जब घन धार अति,
मेघराग के बोल १८ सिरी राग के सुर सुने, सूखो वृक्ष
हराय। दीपक दीपक बर उठै, कोऊ जानै गाय॥ १९॥

अथ राग अलाप समय॥

पिछले पहरे निशि समय, भैरों राग बखान। माल-

कोस तब गाइये, जब लग निकसै भान २० एक पहर दिन चढ़ेतक, कह्यो राग हिंडोल। ठीक दुपहरी के समय, दीपक के सुर बोल २१ सिरी राग चौथे पहर, जब लौं दिन अधियाय। मेघराग जबहीं भलो, जबै मेघ बरसाय २२ फागुन में ये राग सब, जागत आठोयाम। अष्टयाम में निशि समय, एक याम बिश्राम॥ २३॥

अथ राग की ऋतुवर्णन॥

भैरों शरद कौशिक शिशिर, और हिंडोल बसन्त। दीपक ग्रीषम हेम श्री, मेघ सुपावस अन्त॥ २४॥

अथ बाजे वर्णन॥

जग में सब सुरता कहैं, बाजे साढ़े तीन। खालतार अरु फूँक पुनि, अर्द्ध ताल सुरहीन २५ खाल नगारो ढोल डफ, और पखावज जान। तार तँबूरा बीन है, बहुरि रबाब बखान २६ फूँक नफीरी बाँसुरी, सरनाई

करनाय। ताल खंजरी झांझ सब, बाजे दिये बताय॥ २७॥

अथ गान आसन॥

बैठे आसन ऊंट को, तब हो शुद्ध अलाप।
चलते लेटे सुर भरै, मानो महा कलाप॥ २८॥

अथ भैरों स्वरूपवर्णन॥

भैरों शिव छबि शिरजटा, श्वेत बसन तिरनैन।
मुण्डन की माला गले, सिद्धरूप सुख दैन २९॥ सवैया॥
शिव मूरति भैरों को भाव बन्यो, तिरनेतर मुण्ड की माल गरे। पट श्वेत सबै तनमें पहरे, हृदये भगवान को ध्यान धरे॥ तिरशूल बिराजत है कर में, सब भामिनि को मन लेत हरे। तन छार लगे द्युति दूनि भई, चित चाहन में जियजात छरे॥ ३०॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन॥

शिव पूजत कैलासपर, दोऊ कर में ताल। श्वेत

चीर आँगिया अरुण, रूप भैरवीबाल ३१ भस्म पिटारी करगहे, हाथलिये तिरशूल। बंगाली व्याकुल भई, गई सबै सुध भूल ३२ कर्णफूल दुपहरिया, कर कङ्कण शृङ्गार। शीश केश सोहत छुटे, श्वेत बसन बैरार ३३ कङ्कण तव लोचन कमल, नागरि महा अनूप। पियपै बैठी हँसत है, मधु माध्वी यह रूप ३४ पुहुप बदन कानन धरे, पहिरे बस्तर लाल। क्रोधवन्त तिरशूल कर, लिये सिन्धवी बाल ॥ ३५ ॥

अथ मालकोसस्वरूपवर्णन ॥

मालकोस नीले बसन, श्वेत छरी है हाथ। मोतिन की माला गले, सगरी सखियां साथ ३६ ॥ सवैया ॥ कौसिक की उपमा है भली, तन गोरे बिराजत है पट नीलो। माल गले कर श्वेत छरी, रस प्रेम छक्यो जिय छैल छबीलो। नागरि रूप उजागरि लै, सँग डोलतहै

सुखसों गरबीलो। कामिनि को मन मोहत है, मन भावन रूप अनङ्ग रसीलो ॥ ३७ ॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन ॥

दो० टोड़ी कर बीणागहे, गावत पियके हेत। चञ्चल छवि मृगलोचनी, पहिरे बस्तर श्वेत ३८ गोरी छबि अति साँवरी, अम्ब पुहुप धर कान। तिरषा तन तप काम की, गावत मीठी तान ३९ छुटे केश तन गुनकली, बैठी पिय के पास। नीची ग्रीवा करिरही, अतिही चित्त उदास ४० खम्बावति गोरे बदन, गावत कोकिल बैन। अति आतुर चातुर खड़ी, कामवन्त दिनरैन ४१ कोक व कामिनि निशा में, जागै पियके सङ्ग। रति मानै कै छीन तन, अङ्ग अङ्ग में रङ्ग ॥ ४२ ॥

अथ हिंडोलस्वरूपवर्णन ॥

दो० पीत बसन हिंडोल के, है जो हिंडोरे माहिं।

सखी झुलावत चाव सों, गाय गाय मुसकाहिं ४३ ॥ सवैया ॥ कीन्ह बनाव महा छवि सुन्दर भावत बैठ्यो हिंडोलहि डोले। झूंक झुलावत और दुहूं सब गावति हैं सखियां मुख खोले ॥ गोरे सो गात दिखात खरे मनो दामिनिसी द्युति देखत सोले। बस्तर पीत लिये रस रीति अनङ्ग मों सोहैं हँसे मृदु बोले ॥ ४४ ॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन ॥

दो० रामकली नीले बसन, कञ्चन सी सब देह। पिक बानी गावत खड़ी, पिय के प्रेम सनेह ४५ बिरह भरी पटमंजरी, मन मलीन तन छीन। सखी सीख अति देतहै, भई प्रेम आधीन ४६ पियके करपर कर धरे, अति व्यापै तन काम। तन दुर्बल दे साख है, महा बिरहिनी बाम ४७ पुलकित गर माला पुहुप, सुन्दर तरुणी जान। गोरी छबि बस्तर अरुण, नयन काम के बान ४८ काम-

देव को ध्यान धरि, गावत गीत सँगीत। करति शिंगार बिलावलो, लै लै बस्तर पीत ॥ ४९ ॥

अथ दीपकरागस्वरूपवर्णन ॥

दो० दीपक गज की पीठ पर, बैठ्यो बागो लाल। मुक्तमाल शोभित गरे, चहुँ दिशि सिगरी बाल ५० ॥ सवैया ॥ दीपक को परताप बड़ो, चढ़ि बैठ्यो गयन्द की पीठ बिराजै। अम्बर राते शरीर सबै, मुक्तान की माल गले छबि छाजै ॥ संग सखी सब सोहत हैं, तिन माहिं जो आप गयन्द सो गाजै। साँवरो रूप स्वरूप बन्यो, द्युति देखत दुःख सबै तन भाजै ॥ ५१ ॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन ॥

दो० देशी अति बिस्तरहरै, काम सताई नार। पति को ठेल जगावती, सिसकी बारम्बार ५२ अरुण बरन सिगरे बसन, नटवासी नट नारि। दोऊ कांधे करधरे

पिय तन रही निहारि ५३ शीश पत्र गज दन्त को, कर बांकी तरवारि । मोरकण्ठ के बरणहै, रूप कान्हरा नारि ५४ शीश जटा सब तन लटा, गरे जनेऊ नाग । केदारो यह रूप है, धरे मान बैराग ५५ कामवन्त कामोद है, पीत बसन तन तास । अम्बातरु बैठी हँसत, पिछरी पिय को पास ॥ ५६ ॥

अथ सिरीरागस्वरूपवर्णन ॥

दो० सिरीराग के कर कमल, भूप रूप पट लाल । बर्ष अठारह के बरण, गावत कण्ठ रसाल ५७ ॥ सवैया ॥ बर्ष अठारहको बरण्यो, मुख देखत ही सब के मन भावै । बाम सबै वशकै अपने, गुण गायके भावते भेद बतावै ॥ रातो जो बागो बिराजत है, कर बारिज फूल लिये मुसकावै । भूप के रूप स्वरूप बन्यो, सबही में भलो सिरि राग कहावै ॥ ५८ ॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन ॥

दो० धनासिरी बिरहिनबड़ी, हृदय बिहार अपार। सब तन पियरो ह्वै रह्यो, निपट क्षीण तन बार ५६ चन्दन टीको भालपर, गरे नाग को हार। छबि अति सुन्दरि साँवरी, आसावरी कुमारि ६० मारू के माला गरे, पिये प्रेम मदमात। तरुणी सुन्दरि साँवरी, बैठी अति अलसात ६१ मोरपक्ष शिर पर धरे, बस्तर पीत बसन्त। कानफूल जो अम्ब को, चहुँ दिशि भ्रमर भ्रमन्त ६२ मालसिरी दुर्बल बदन, सखी हाथ पर हाथ। चन्द्र ओर पतिको तकत, चहै मदन को माथ ॥ ६३ ॥

अथ मेघरागस्वरूपवर्णन ॥

दो० श्यामबरण जो मेघ है, गहे हाथ तरवार। अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरत बिचार ६४ ॥ सवैया ॥ मेघमलार महा अति सुन्दर, इन्दर की छबि आप बन्यो है। पहरे पट श्याम गहे तरवार, जो माल गरे इह भांति

ठन्यो है ॥ जैसो जहां चहिये जोइ अङ्ग, सो तैसिय भांति में आप धन्यो है ॥ काम को आतुर है अति ही, तिय की रति को चित चाव बन्यो है ॥ ६५ ॥

अथ रागिनीस्वरूपवर्णन ॥

दो० भूपाली बिरहिन खरी, केसर बोरे चीर। भयो बिरह की ज्वाल तें, पीरो सबै शरीर ६६ बिरह जरा तन गूजरी, रोवत छूटे केश। कामदेव कानन लगे, तिनहिं दियो उपदेश ६७ देसकार कञ्चन बरन, खेलत पिय के सङ्ग। हिय हुलासहै कामको, चढ़चो जो जोबन अङ्ग ६८ बीन गहे गावत बहुत, रोवति है जल द्वार। तन दुर्बल बिरहा दहै, बिरहिन नारि मलार ६९ सेज बिछाई कमल दल, लेट रही मन मारि। लेत उसास उसी परी, तनक बियोगिनि नारि ॥ ७० ॥

इति सभाविलासः समाप्तिमगादिति शम् ॥